नवम्बर २००० Rs. 10/-

चन्दामामा

बाल विशेषांक

चन्दामामा

सम्पुट - १०२ नवम्बर २००० सञ्चिका-११

अन्तरङ्ग

कहानियाँ

पौराणिक धारावाहिक

बाल विशेषांक

दीपावली की विभिन्न कथाएँ

विशेष

स्पर्धा

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K Press Pvt. Ltd., Chennai-600 026 on behalf of Chandamama India Limited, New 82 (Old 92), Defence Officers Colony, Ekkatuthangal,Chennai - 600 097. Editor: Viswam

संपादक
विश्वम

चन्दामामा पत्रिका विभाग
नया नं. 82 (पुराना नं.92),
डिफेन्स आफिसर्स कॉलोनी,
इकाडुथंगल,
चेन्नई - 600 097.
e-mail :
chandamama@vsnl.com

For USA
Single copy $2
Annual subscription $20
Mail remittances to
INDIA ABROAD
43 West 24th Street
New York, NY 10010
Tel: (212) 929-1727
Fax (212) 627-9503

भारत की खोज प्रश्नोत्तरी (अक्तूबर २०००)

१. अ. बद्रीकाश्रम, आ. श्रीरंगम इ. श्री जगन्नाथ पुरी
ई. अलाहाबाद, पवित्र प्रयाग उ. बद्रीकाश्रम के निकट

२. मदुरै - मिनाक्षी देवी और सुन्दरेश्वर भगवान ।

संस्थापक

चक्रपाणि, बी. नागि रेड्डी

बाल विशेष माह पर कुछ स्पष्ट बातें

नवम्बर का महीना पूर्ण रूप से भारतीय बच्चों के लिए समर्पित है । इसका अर्थ क्या हुआ? हाँ, क्योंकि साधारणतया इस महीने में सभी वयस्क लोगों से आशा की जाती है कि वे बच्चों के भविष्य के बारे में सोचें और उनका जीवन सार्थक बनाने में मार्गदर्शन भी करें ।

हम यह आशा करते हैं कि बहुत से लोग ऐसा अवश्य करते होगें । परन्तु तब क्या हो, जब बहुत से लोग ऐसा न करें? चलिए इस प्रश्न का सम्भावित उत्तर पाने के लिए अधिक समय न लगाएं । बल्कि इस बात पर विचार करें कि यदि इस देश के सभी बड़े लोग बच्चों के भविष्य की चिंता करें, तो भी यह बात पूर्ण सत्य है कि भविष्य का संचालन इन बच्चों को ही करना है । इसलिए यह आवश्यक है कि बच्चे अपने भविष्य के बारे में स्वयं सोचें और उसे संवारने का प्रयत्न करें।

ऐसा वे कैसे कर सकते हैं?

चलिए इस विषय पर एक सीधी दृष्टि डालते हैं :

बच्चों को, हिंसा-प्रतिहिंसा तथा अन्य कुरीतियों से भरा विश्व पहले से ये विरासत में दिया जा चुका है । वे भौगोलिग रूप से असंतुलित पृथ्वी के उत्तराधिकारी बना दिए गए हैं । यह सब मात्र एक ब्रह्माण्डिक भूल का परिणाम है, क्योंकि वर्तमान समय में मनुष्य दुर्भाग्यवश संपत्ति और शक्ति को अपनी प्रसन्नता का साधन मानने लगा है । यदि आप इस स्थिति पर गम्भीरता से विचार करें तो पता चलेगा कि सारे झगड़े-फसाद, चाहे वह राजनैतिक हों या धार्मिक अथवा व्यापारिक हों, सभी की जड़, मनुष्य की यही गलत सोच है। खुशी व्यक्ति के संतुलित मस्तिष्क और आचरण पर निर्भर करती है ।

उसके आंतरिक गुण ही उसके हर्ष में सहायता करते हैं, न कि बाह्य भौतिक कारण । यदि दूसरे शब्दों में कहें तो, आप स्वयं, बिना किसी की सहायता के ही अपने को प्रसन्न रख सकते हैं । कोई भी नहीं, बल्कि आपके शुभचिंतक और प्यारे माता पिता भी आपकी इस विषय में कोई सहायता नहीं कर सकते ।

आपकी पत्रिका ने इस विषय पर बिल्कुल स्पष्ट और सही बात कही है, क्योंकि उसे आप पर भरोसा है, विश्वास है।

समाचारों में बच्चे

बचाव कार्य का अलग उपाय

१४ वर्षीय डेविड सीसी को पानी में डूबने से बचाने के लिए 'फिलिपो' नामक डॉल्फिन का धन्यवाद! डेविड को तैरना नहीं आता था। एक बार वह और उसके पिता दोनों नाव से मैनफ्रेडानिया की ओर जा रहे थे, जो दक्षिणी इटली का भाग है। अचानक उनकी नाव समुद्र की एक तीव्र लहर में फंस गई। नाव को इतनी जोर से झटका लगा कि डेविड पानी में गिर गया और डूबने लगा। इतने में एक २.७ मीटर लम्बी डॉल्फिन जो खुशी-खुशी नाव के साथ तैर रही थी, उसने डेविड को देख लिया। वह तुरंत जाकर लड़के को अपनी पीठ पर बिठाने की कोशिश करने लगी, जिससे वह डूब न सके। अब डेविड को पता चल गया कि डॉल्फिन उसकी सहायता करना चाहती है। वह तुरन्त जाकर उससे लटक गया और तब तक उसे नहीं छोड़ा जब तक कि उसके पिता ने उसे वापस नाव पर चढ़ा न लिया। वहाँ के मछुआरों ने बाद में उस डाल्फिन का एक नाम रख दिया - 'फिलिपो' और उसे अपना शुभ चिन्ह मान लिया।

बचाए जाने तक कुँए में ही रहे

केरल का चौदहवर्षीय अकबर तभी स्कूल से लौटा था और काफी देर के बाद दोपहर का खाना खा रहा था। इतने में उसने अपने पड़ोसी लड़के की आवाज सुनी, जो दो साल की बच्ची को एक आठ मीटर गहरे कुँए में गिरते देख कर काफी घबराया और डरा हुआ था। अकबर अपना खाना, आधे में ही छोड़कर कुँए की ओर भागा। एक ही छलांग में वह छोटी बची के पास पहुँचकर उसे एक हाथ में पकड़ लिया और दूसरे हाथ से पाईपलाईन को। बहुत सारी औरतें वहाँ इकट्ठा हो गई, परन्तु वे सिर्फ रो और चिला रही थीं। **अकबर को डेढ़ घंटे तक उसी कुँए में इन्तजार करना पड़ा। जब तक कि गाँव के आदमी इकट्ठा हो सके।** इसके बाद उन्होंने कुँए में एक बाल्टी लटकाई, जिसमें अकबर ने बच्ची को रख दिया। इस प्रकार बच्ची को सुरक्षित बाहर निकाला जा सका। अकबर के लिए बाल्टी बहुत छोटी थी। वह वहीं से चिल्लाया कि वह बाहर आने के लिए रस्सी का उपयोग करेगा। लेकिन उस समय तक वह काफी थक चुका था। तब उसके लायक एक बड़ी कुर्सी कुँए में लटकाई गई। अपने इस साहसी कार्य के लिए वह बहादुरी का सम्मान पाने के योग्य है। आप क्या कहते हैं?

अब एक लड़की महावुत?

सामान्यतः हम देखते हैं कि किसी भी चिड़िया घर में जानवरों के छोटे-छोटे नवजात बच्चों की देखभाल करने का कार्य अनुभवी और अधिक आयु वाली औरतें करती हैं। परन्तु अब, एक १२ साल की लड़की विजयलक्ष्मी १० फीट लम्बे और ३१ साल के, दाँत वाले हाथी की देख-भाल करती है । त्रिसुर केरल के अशोक कुमार ने श्रीकृष्णा नामक एक हाथी को बिहार के हाथी मेले से खरीदा और उसे केरल ले आए । जब महावुत वापस बिहार चला गया तो अशोक को ध्यान आया कि हाथी तो सिर्फ हिन्दी भाषा ही समझता है! वह बहुत परेशानी में पड़ गया। फिर भी साहस कर वह कई लोगों को साथ लेकर हाथी को घुमाने निकल पड़ा । अशोक के एक सम्बन्धी गिरीश ने भी उसका साथ दिया और गिरीश के कारण ही अशोक को यह याद आया कि उसकी सतवीं कक्षा में पढ़नेवाली बच्ची स्कूल में हिन्दी भी पढ़ती है। उसने अपनी बेटी को भी साथ ले लिया ।

श्रीकृष्णा को पहले तो अचम्भा हुआ होगा कि कोई लड़की उसे आदेश दे रही है, चलो! - हटो । परन्तु अब वे बहुत अच्छे मित्र हो गए हैं। अब प्रति दिन यह देखने को मिलता है कि विजयलक्ष्मी जब स्कूल से लौटकर आती है तो हाथी को शाम को घुमाने के लिए ले जाती है । वह बड़े ही आत्मविश्वास के साथ हाथी की देखभाल करती है ।

दातों का कौशल

MUMMEEE...

अब आप लोग यह मत पूछिए कि मध्यप्रदेश के दातिया जिले की सीमा भदोरिया कौन-सा दंतमंजन प्रयोग करती हैं? दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली यह छात्रा, हो सकता है कि अपने दंत मंजन का नाम न बताए । बल्कि हो सकता है, वह आपसे एक हवाई जहाज को दांत से खीचने का कर्तब देखने को कहे । हाँ, जिसे वह स्वयं अपने दांतों से खींचती है । भोपाल के बैरागढ़ विमान पत्तन पर उसने यह कर भी दिखाया है । वह १४ लोगों के बैठने वाला सरकारी हवाई जहाज था । अब जब कि वह गिनीज बुक आफ रिकार्डस में अपना नाम दर्ज करवाने की प्रतीक्षा कर रही, तो वह "बोईंग ७४७" को दाँत से खीचने की अनुमति मांगेगी ।" क्या तुम्हारे दाँत पहले से ही हिलने लगे हैं?

भूख को दण्ड

जयंत मंदार देश का शासक था । वह बड़ा ही कुशल शासक था । एक दिन पुरुषोत्तम नामक एक आदमी खज़ाने में चोरी करता हुआ पकडा गया । सैनिक उसे दरबार में आसीन राजा के सम्मुख ले आये ।

पुरुषोत्तम को संबोधित करते हुए जयंत ने पूछा "चोरी के अपराध में तुम पकड़े गये । इससे यह साफ़ है कि तुम चोर हो । तुम्हारी चोरी को साबित करने के लिए और सबूतों की आवश्यकता नहीं है । परंतु, तुम्हें कुछ कहना हो तो कहो ।"
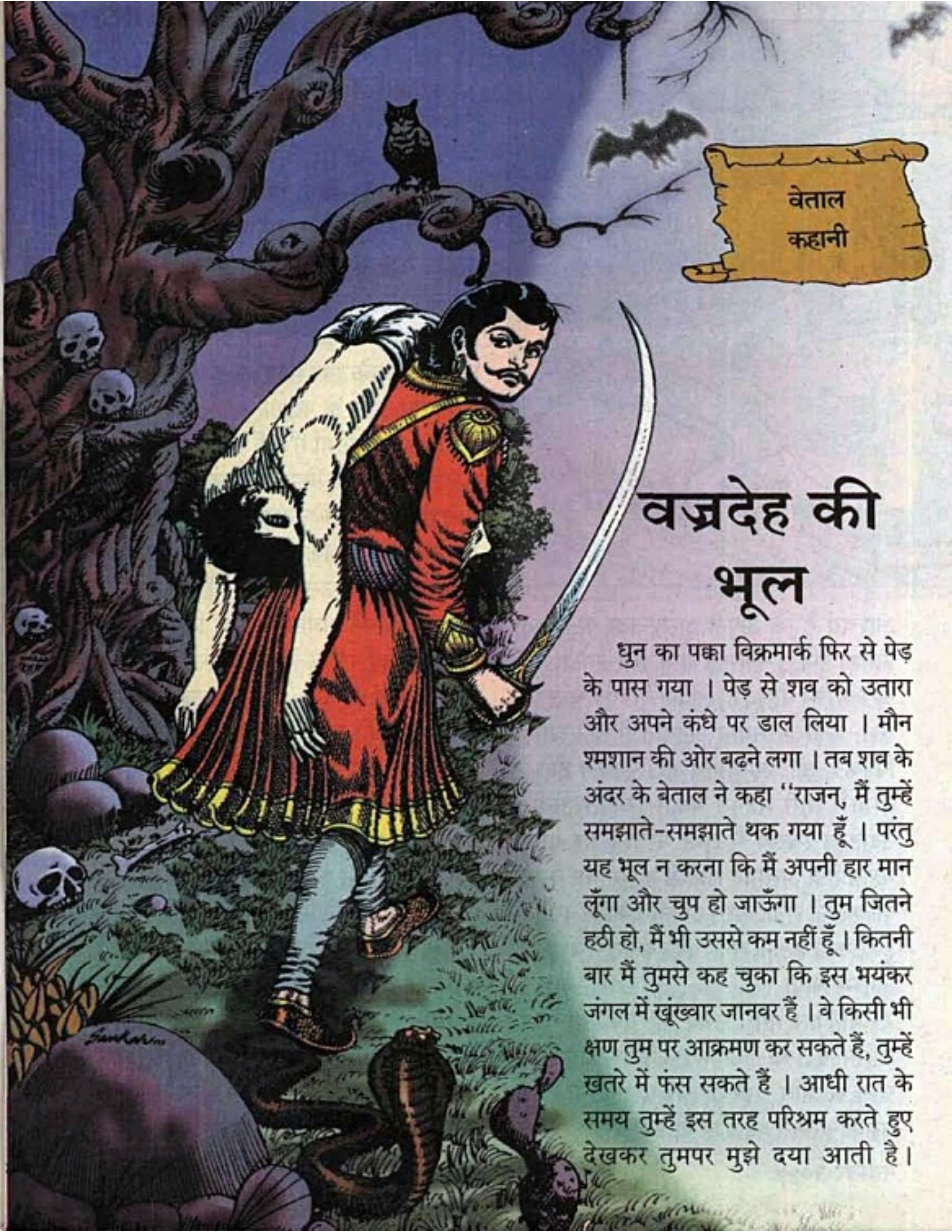
दण्ड से बचने के लिए पुरुषोत्तम ने खूब सोचा और एक निर्णय पर आया । उसने राजा से सविनय कहा "महाप्रभु, जानबूझकर मैंने यह चोरी नहीं की । मेरी भूख ने यह चोरी करने के लिए मुझे विवश कर दिया । इसी ने मुझे प्रेरणा भी दी । अगर आप मुझे सज़ा देने.पर ही तुले हुए हैं तो मेरी इस भूख को भी दण्ड दीजिये ।" राजा की समझ में नहीं आया कि भूख को कैसे दण्ड दिया जाए? राजा को पशोपेश में पड़ा देखकर चोर ने निर्णय कर लिया कि अब उसे छोड़ दिया जाना निश्चित है।

किन्तु जयंत ने अच्छी तरह से सोचने-विचारने के बाद यह आज्ञा दी कि "इसे एक साल तक जेल में रखा जाए । इसके बयान को सुनने के बाद यह बात स्पष्ट है कि भूख ने ही इसे चोरी करने के लिए उकसाया और प्रेरणा दी । अंततः इसकी भूख को भी दंड देना न्यायसंगत व समुचित लगता है । एक हफ़्ते तक इसे भूखा रखा जाए और यों उस भूख को भी दंड दिया जाए ।"

- प्रदीप

वेताल कहानी

वज्रदेह की भूल

धुन का पक्का विक्रमार्क फिर से पेड़ के पास गया । पेड़ से शव को उतारा और अपने कंधे पर डाल लिया । मौन श्मशान की ओर बढ़ने लगा । तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, मैं तुम्हें समझाते-समझाते थक गया हूँ । परंतु यह भूल न करना कि मैं अपनी हार मान लूँगा और चुप हो जाऊँगा । तुम जितने हठी हो, मैं भी उससे कम नहीं हूँ । कितनी बार मैं तुमसे कह चुका कि इस भयंकर जंगल में खूंख्वार जानवर हैं । वे किसी भी क्षण तुम पर आक्रमण कर सकते हैं, तुम्हें ख़तरे में फंस सकते हैं । आधी रात के समय तुम्हें इस तरह परिश्रम करते हुए देखकर तुमपर मुझे दया आती है ।

आश्चर्य है कि अपनी असफलता के बावजूद निराशा तुम्हें छू तक नहीं पायी, धैर्य-साहस तुममें जैसे के तैसे मौजूद हैं, लेकिन मेरी एक बात याद रखो, इन्हीं के समान अनुपात में होने चाहिये विवेक, और समयबोध भी। ऐसा न होने पर तुम्हारी सारी मेहनत बेकार साबित होगी । उदाहरण स्वरूप मैं तुम्हें मांजलि भट्ट नामक महामंत्री व असमान साहसी व शूर-वीर वज्रदेह की कहानी सुनाऊँगा । अपनी थकावट दूर करते हुए उनकी कहानी सुनो'' फिर बेताल ने यों कहना आरम्भ किया ।

महिपाल मगध राज्य का राजा था । वह शासन-दक्ष था । अपने राजनैतिक शत्रुओं की चाल पर चाल चालकर उन्हें पछाड़ने में शायद उसकी बराबरी का कोई भी नहीं था।

ग्रहणगिरि उसका पडोसी राज्य था । उसके राजा कुंजर की बहुत समय से यह तीव्र इच्छा थी कि जो भी हो, जैसे भी हो, मगध को अपने अधीन कर ले। किन्तु महिपाल की दक्षता और उसके अपार सैनिक बल के सामने वह टिक न सका । उसकी कोई भी चाल सफल नहीं हुई । कुछ प्रयत्नों से उसने स्पष्ट जान लिया कि मगध किसी भी हालत में उसके अधीन नहीं होगा । निराशा व निरुत्साह उसके हृदय में घर कर गये । इसी चिंता में वह रोग-ग्रस्त हो गया ।

इन परिस्थितियों में मंत्री मांजलिभट्ट ने राजा कुंजर से निवेदन किया ''राजन्, हम उतने शक्तिशाली नहीं हैं, जितना मगध है । परन्तु इसका यह मतलब नहीं, कि हम निराश हो जाएँ और निर्णय कर बैठें कि उसे जीता ही नहीं जा सकता। मगध को अपने अधीन करने के लिए मैंने एक अचूक उपाय सोचा है। मैं बहुरूपिया बनकर उस राज्य में जाऊँगा । वहाँ अराजकता तथा विद्रोह की सृष्टि करूँगा । उस राज्य को छिन्न-भिन्न करूँगा । इस विकट परिस्थिति को संभालने और सुधारने में महिपाल को समय लगेगा । तब उस राज्य पर आक्रमण कर दीजिये और मगध को अपने अधीन कर लीजिये ।'' फिर दूसरे ही दिन वह मगध जाने निकल पड़ा ।

मगध का सेनाधिपति एक महीने से हृदय रोग से पीड़ित था, जिसके कारण से उसका देहांत हो गया । अब महिपाल के सम्मुख समस्या उपस्थिति हो गयी कि उसकी जगह पर किसे सेनाधिपति बनाया जाए । उसने मंत्रियों से इसके बारे में चर्चाएँ कीं । उस समय गुप्तचरों के द्वारा

उन्हें मालूम हुआ कि भैरव नामक एक दगाबाज है, जो मगध की सरहदों के निवासियों को बराबर धोखा देता आ रहा है और अपार संपत्ति इकट्ठी कर रखी है। पीड़ित जनता ने एक दिन उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और उसे खूब मारा-पीटा। वह भयभीत होकर अरण्य में जाकर छिप गया।

भैरव तब से इसी कोशिश में लगा रहा कि यहाँ से निकल जाऊँ और किसी सुरक्षित स्थान में पहुँच जाऊँ। एक दिन उसने झाड़ियों में से एक कराह सुनी। कोई पानी, पानी कहकर चिल्ला रहा था।

भैरव ने झाड़ियों के पीछे चट्टानों के बीच फंसे एक बूढ़े राक्षस को देखा। वह उसके लिए तुरंत पानी ले आया और उसकी प्यास बुझायी। फिर राक्षस पर जो चट्टान गिरी हुई थी, उसे हटाया।

बूढ़े राक्षस ने अपनी कृतज्ञता जताते हुए कहा ''हे नर, मैं तुम्हारी सहायता कभी नहीं भूलूँगा। मेरे सगे भाई ने इस अरण्य पर अपना संपूर्ण आधिपत्य जमाने के लिए मेरी यह हालत की। उसने मेरे साथ बड़ी निर्दयता के साथ व्यवहार किया। उस पहाड़ पर से चट्टानें गिराकर मेरा अंत कर देने पर तुल गया। कहो, तुम्हें क्या चाहिये? मैं यथाशक्ति तुम्हारी मदद करूँगा।''

भैरव ने राक्षस के दोनों लंगड़े पैरों को देखकर उसपर दया दिखाते हुए कहा ''तुम खुद लंगड़े हो, मेरी क्या मदद कर सकोगे? मुझे अपार धन चाहिये।''

''यहाँ मानव नहीं आते, फिर धन कैसे और कहाँ से मिलेगा?'' राक्षस ने अपनी असहायता

व्यक्त करते हुए कहा।

उसकी बातें सुनकर भैरव के दिमाग़ में एक उपाय-सूझा। उसने कहा ''अपने बुद्धिबल के बूते पर ऐसा उपाय करूँगा, जिससे लोग तेरे पास आते रहें। उनका मांस तुम्हारा है तो उनके गहने, धन आदि मेरे होंगे।''

नरमांस की बात सुनते ही राक्षस में खुशी के फब्बारे फूट पड़े और उसने कहा ''नर मांस, चालीस सालों के पहले कभी एक बार खाया था। जो कहोगो, मैं वह करने को तैयार हूँ।''

भैरव वहाँ से निकलकर तुरंत अरण्य प्रांत के निकट के मगध राज्य में गया और लोगों से कहने लगा ''त्रेतायुग का एक राक्षस जंगल में है। वह श्रीरामचंद्र से एक बार जूझ पड़ा। फलस्वरूप उसकी दोनों टांगें गयीं। अब श्रीराम नाम का
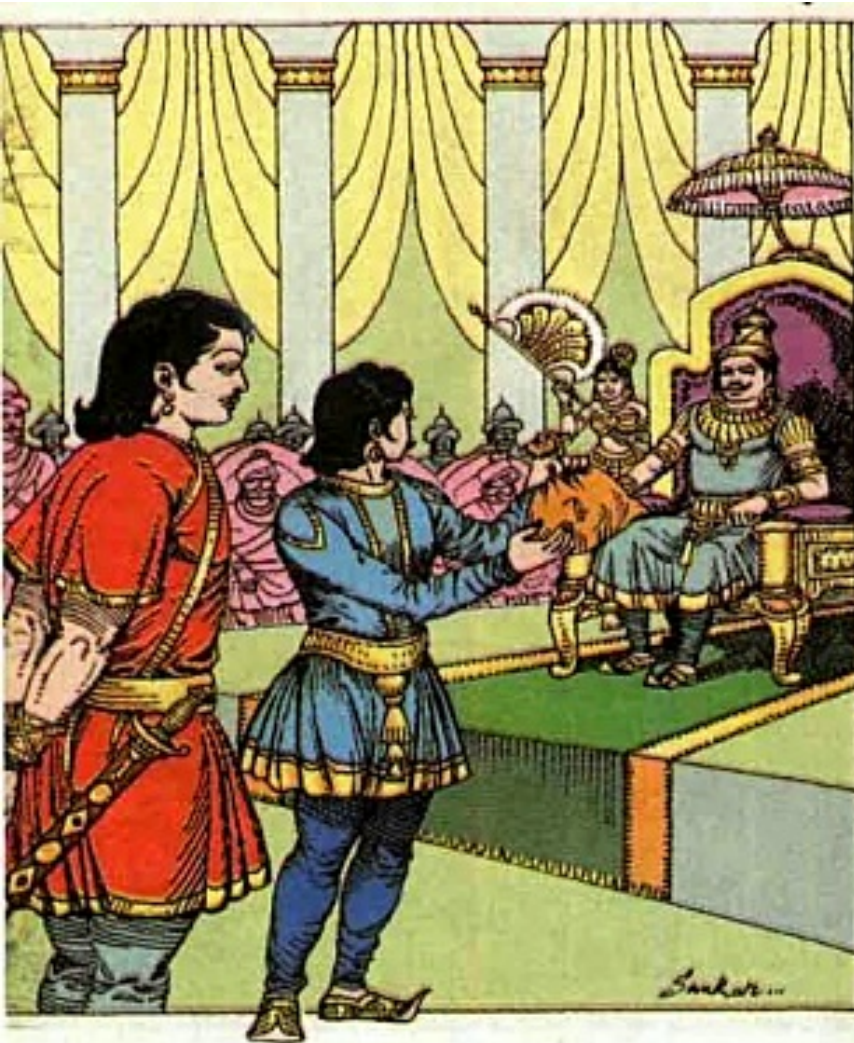
जप करते हुए जंगल में ही अपना समय बिता रहा है । निष्ठापूर्वक वह राम की पूजा कर रहा है।''

उसका प्रचार ज़ोर पकड़ता गया । लोगों ने उसकी बातों को सच माना । वे जंगल में उसका दर्शन करने जाने लगे । कुछ लोग क्रूर मृगों से भयभीत होकर लौटते थे तो कुछ लोग राक्षस का आहार बन जाते थे । दो-तीन दिनों में एक बार भैरव छिपकर उससे मिलता और गहने, धन ले आता था ।

राजा महिपाल को मालूम हुआ कि भैरव के इस प्रचार से आकर्षित होकर कुछ लोग जंगल में जा रहे हैं, पर वे वापस नहीं आ रहे हैं । मंत्रियों से उसने कहा ''हमें यह मालूम नहीं हो रहा है कि वास्तव में जंगल में क्या हो रहा है ? आप ऐलान कर दीजिये कि जो वास्तविकता को जान पायेगा और जनता की रक्षा कर पायेगा, वह नये सेनाधिपति के पद पर नियुक्त किया जायेगा । इससे हमें एक समर्थ सेनाधिपति भी मिलेगा और साथ ही जनता की समस्याएँ भी हल होंगीं ।''

मंत्रियों ने राजा के कहे अनुसार घोषणा की । इस घोषणा को सुनने के बाद युवराज का पृथ्वी नामक बाल मित्र जंगल जाने निकल पड़ा । पृथ्वी युवराज की ही तरह सभी क्षत्रियोचित विद्याओं में माहिर था । जंगल में वह घूमता रहा और आख़िर राक्षस के रहने की जगह को भी ढूँढ़ पाया । आवेश में आकर उसने राक्षस से भिड़ पड़ने का विचार छोड़ दिया और एक पेड़ के पीछे छिपकर वह उसकी करतूतों को सावधानी से देखने लगा ।

उस दिन कोई भी मानव राक्षस के पास नहीं आया । पर शाम को भैरव एक थैली लेकर वहाँ पहुँचा । राक्षस ने पथ्थर के नीचे छिपाये गये गहनों को उसके सुपुर्द किया । वह उन्हें लेकर वहाँ से चलता बना । पृथ्वी ने भैरव का पीछा किया और उसे पकड़ लिया । फिर वह उसे राजा महिपाल के पास ले आया और पूरा विवरण देते हुए उसने कहा ''प्रभु, भैरव बड़ा ही धोखेबाज़ है। लोगों को इसका व्यूह मालूम हो जाए, इसकी चालाकी का पता लग जाए तो आगे से कोई भी उस राक्षस के पास नहीं जायेगा और वह लंगड़ा राक्षस नरमांस के लिए कहीं भी आ नहीं पायेगा।''

पृथ्वी ने किसी भी अस्त्र-शस्त्र को उपयोग में लाये बिना ही अपने बुद्धि-बल के आधार पर इस समस्या का परिष्कार सुगमता से किया । इसके लिए महिपाल ने उसका अभिनंदन किया और भैरव को जेल में डाल दिया ।

दूसरे ही दिन जब महिपाल, पृथ्वी को सेनाधिपति के पद पर नियुक्ति की घोषणा की तैयारियों में लगा हुआ था, तब वज्रदेह नामक व्यक्ति ने एक राक्षस के सिर को अपने हाथ में लिये दरबार में प्रवेश किया और कहने लगा "महाराज, अपनी कुयुक्तियों के द्वारा हमारी जनता को अपना आहार बनानेवाले इस राक्षस का सिर धड़ से अलग करके ले आया हूँ। यह देखिये।"

उसके पीछे-पीछे कितने ही उसके अनुचरों ने दरबार में प्रवेश किया। वज्रदेह के पिता ज्ञानमुनि सुप्रसिद्ध गुरु थे। जब वे जीवित थे, तब उन्होंने एक गुरुकुल भी चलाया। इस प्रकार मगध राज्य के कितने ही निष्णातों की उन्होंने सृष्टि की। उनके पर्यवेक्षण में ही मगध के कितने ही उत्तम नागरिक योद्धा, विद्वान और विलक्षण व्यक्ति बन पाये। जन-साधारण में उनके प्रति अपार गौरव था। इसलिए वज्रदेह को सेनाधिपति बनने के लिए उन्होंने पर्याप्त प्रोत्साहन दिया। इसीलिए जंगल जाकर वह राक्षस का सिर काटकर ले आया।

राक्षस का कटा सिर देखकर महिपाल थोड़ी देर तक अवाक् रह गया। फिर उसने वज्रदेह से कहा "तुमसे पहले ही पृथ्वी इस परीक्षा में जीत चुका है। तुमने ऐसे राक्षस का सिर काटा है, जो लंगडा है और स्वयं किसी को हानि पहुँचाने की स्थिति में नहीं है। वह किसी और के सुझाये गये उपाय का फ़ायदा उठाता रहा। परंतु पृथ्वी ने इस अनर्थ के मूल कारक भैरव को पकड़ा है। इसके लिए उसने किसी अस्त्र-शस्त्र का भी उपयोग नहीं किया। मेरी दृष्टि में भैरव को बंदी बनाना ही इस समस्या के परिष्कार का सही मार्ग है।"

राजा की बातों से क्रोधित, वज्रदेह के अनुयायी शोर मचाने लग गये। वज्रदेह ने उन्हें समझाया-बुझाया और वापस चला गया। वहाँ जमा अनुयायियों में से मंत्री मांजलि भट्ट भी एक था। उसने अपने सिर पर एक कंबल ओढ़ लिया था और दाढ़ी भी बढ़ा रखी थी, जिससे उसे कोई पहचान न सके। थोड़ी दूर जाने के बाद वह वज्रदेह से मिला और कहने लगा "वज्रदेह, पृथ्वी युवराज का मित्र है, इसीलिए उसे यह पद दिया गया है। सच कहा जाए तो तुम उससे भी बड़े शूर-वीर हो, साहसी हो, बुद्धिमान हो। हर प्रकार से तुम उस पद के योग्य हो। मेरा कहा मानोगे तो तुम सेनाधिपति बनोगे। यह कैसे संभव होगा,
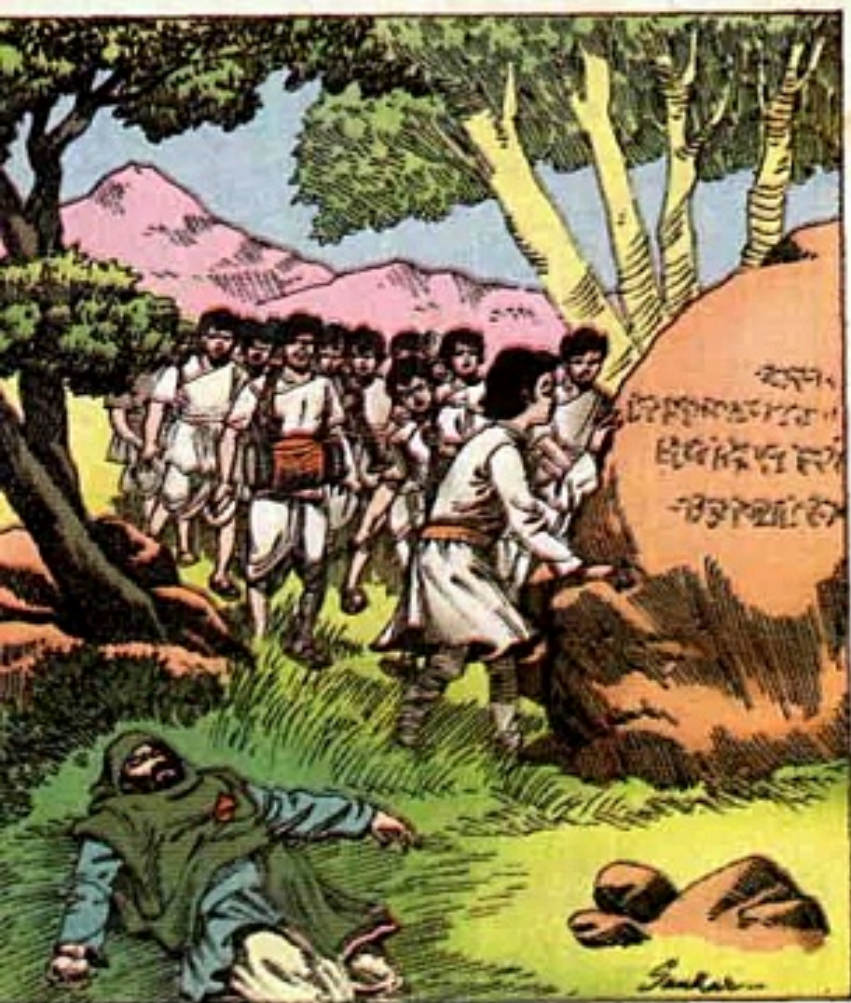
मुझपर छोड़ दो ।'' उसने वज्रदेह को और उसके मित्रों को यों उकसाया और उन्हें अपने रहस्य-स्थल पर ले गया ।

मांजलिभट्ट की योजना के अनुसार वज्रदेह के नेतृत्व में उसके अनुयायियों ने दूसरे ही दिन नगर के व्यापार स्थलों को ध्वंस किया, नगर के प्रमुख व्यक्तियों और उच्च राजकर्मचारियों का अपहरण करके उन्हें बंदी बनाकर ले आये । फिर उन्होंने धमकी देते हुए महिपाल को संदेश भेजा कि वज्रदेह को सेनाधिपति बनाने पर ही इन्हें छोड़ दिया जायेगा अथवा उन्हें मार दिया जायेगा ।

राजा ने गुप्तचरों को आदेश दिया कि वे वज्रदेह के बारे में पूरी जानकारी पावें । दो दिनों में ही वे लौटकर आये और महाराज से कहा ''प्रभु, वज्रदेह की अराजकता के पीछे ग्रहणगिरि राजा का हाथ है। उनका कुटिल मंत्री मांजील भट्ट हमारे राज्य में आकर यह कुतंत्र रच रहा है । वज्रदेह और उसके अनुयायी उसके हाथ की कठपुतलियाँ मात्र हैं ।''

राजा महिपाल ने मंत्रियों से दीर्घ चर्चाएँ करने के बाद घोषणा की कि पृथ्वी सेनाधिपति के पद से हटाया जा रहा है और उसकी जगह पर वज्रदेह सेनाधिपति के पद पर नियुक्त किया जा रहा है ।

इस घोषणा को सुनकर उसके मित्रों की खुशी का ठिकाना न रहा । वे विजय-गर्व के साथ उसे ले आने उसके निवास स्थल पर गये । परंतु वह वहाँ नहीं था । किन्तु मांजलिभट्ट मात्र वहाँ मरा पड़ा था। उसका सर चकनाचूर कर दिया गया था । एक पथ्थर पर संदेश लिखा हुआ था ''मित्रो, मैं सेनाधिपति पद के योग्य नहीं हूँ । मैंने कुटिल, षडयंत्रकारी व द्रोही मांजलिभट्ट को मौत के घाट उतार दिया, जिसके कारण नगर में यह अराजकता हुई, ये दुष्कर्म हुए । मैं राज्य छोड़कर जा रहा हूँ ।''

बेताल ने कहानी सुनाने के बाद अपना संदेह व्यक्त करते हुए कहा ''राजन्, महिपाल को चाहिये था कि वह वज्रदेह को कड़ी से कड़ी सज़ा दे, क्योंकि सेनाधिपति की लालच में आकर उसीने यह अराजकता फैलायी । परंतु उसने ऐसा न करके घोषित कर दिया कि पृथ्वी की जगह पर वज्रदेह सेनाधिपति होगा । क्या इससे राजा की अशक्तता, भीरुता प्रकट नहीं होती? यद्यपि राजा ने वज्रदेह को सेनाधिपति बनाने की घोषणा की, राजा ने अपनी हार मान ली, फिर भी वज्रदेह का इस पद को स्वीकार न करना और राज्य छोड़कर

भाग जाना उसकी बौद्धिक अपरिपक्वता को नहीं जताते? क्या यह उसकी ग़लती नहीं है? उस मांजलिभट्ट को मारने की क्या ज़रूरत आ पड़ी, जिसके द्वारा उसे यह पद प्राप्त होनेवाला था?'' मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।

राजा विक्रमार्क ने कहा ''वज्रदेह को सेनाधिपति घोषित करने के पीछे महिपाल की आशक्ति नहीं, भीरूता नहीं, बल्कि उसका राजनैतिक चातुर्य है । अगर वह बिना सोचे-विचारे वज्रदेह और उसके अनुयायियों को मारने के लिए सेना भेजता तो हो सकता है, राज्य प्रमुख मारे जाते । विजय-गर्व में तैश होकर जब वज्रदेह और उसके अनुयायी दरबार में आयेंगे, तब उन्हें पकड़ लेना और दंड देना आसान है । राजा की इस युक्ति से खून ख़राबी टल गयी । अब रही वज्रदेह की बात । निःसंदेह ही वह धैर्यशाली और संस्कारी था । राजा के निर्णय के विरुद्ध जब उसके अनुयायियों ने दरबार में शोर मचाया, विद्रोह करने पर तुल गये, तब उसने उन्हें शांत किया और बिना कुछ बोले चुपचाप चला गया। वह मांजलिभट्ट की बातों में आ गया और गुमराह हो गया । सेनाधिपति बनने के प्रलोभन में अपना विवेक और मानसिक संतुलन खो बैठा । फलस्वरूप उसने नगर में अराजकता की सृष्टि की। राजा की घोषणा सुनते ही वह शांत होकर सोचने लगा । उसका आवेश घट गया । उसमें विवेक जाग उठा । उसके सुप्रसिद्ध ज्ञानी पिता भली-भांति जानते थे कि महिपाल कितना दक्ष, न्यायी और चतुर राजा है । इसलिए उसे यह जानने में देर नहीं लगी कि जब वे दरबार में प्रवेश करेंगे, तब वे अवश्य ही क़ैद किये जाएँगें और उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दी जायेगी । समयबोध ने उसे सावधान किया और उसे अपनी भूल पर पछतावा हुआ । अराजकता के कारक मांजलिभट्ट को मारने में उसने कोई अनाकानी नहीं की । वह इस दंड के लायक भी था। उसने ऐसा करके ठीक ही किया ।''

राजा का मौन भंग होते ही बेताल शव सहित अदृश्य हो गया ।

(आधार - प्रतिभा देवी की रचना)

समस्या का हल हो गया

सात वर्ष का बालक राम पढ़ाई में चतुर और खेल-कूद में भी सक्षम था । उसके माता-पिता उससे संतुष्ट थे । उसके स्नेहिल बाल स्वभाव के कारण सभी लोग उसे पसंद करते है ।

राम के घर में कुत्ते का एक पिल्ला है । उसका नाम है मुनमुन। राम उसे जी-जान से चाहता है। उससे खेलता रहता है और खुद उसे खाना खिलाता भी है ।

राम की माँ अपने बेटे को बहुत चाहती है, लेकिन उसके पिल्ले को नहीं । दो बातों पर उससे वह नाराज़ है । पहला - हर दिन काफी देरी से जागता है और दूसरा है, जब देखो उस पिल्ले से खेलता रहता है । उसने उसे बहुत समझाया, परंतु वह अपनी आदतों से बाज नहीं आया । माँ की बातों पर उसने ध्यान ही नहीं दिया ।

तड़के ही राम की माँ के घरेलू काम शुरू हो जाते हैं । आँगन में वह पानी छिड़कती है और घर के अंदर और बाहर के भागों को झाड़ू देकर साफ़ करती है । खेत पर जाते हुए अपने पति की ज़रूरतों को पूरा करती है । पशुओं को चारा खिलाकर दूध दुहती है । इतने काम उसे सबेरे-सबेरे करने पड़ते हैं । इतने कामों के बीच में व्यस्त होते हुए भी बीच-बीच में वह अपने बेटे को जगाने का प्रयत्न करती रहती है । मज़बूरन राम उठकर बैठ जाता है। परंतु माँ के चले जाते ही कंबल ओढ़कर फिर सो जाता है । राम की माँ पिछवाड़े में काम करती रहती है तो वह पिल्ला उसके कामों में अड़चन डालता रहता है । इससे उसे पिल्ले से चिढ़ हो गयी।

उस दिन शाम को पाठशाला से लौटते ही वह उस कुत्ते के पिल्ले के साथ मैदान में खेलने निकल पड़ा । राम की माँ नाराज़ हो उठी और उसने उससे कहा ''राम, हर रोज़ तुम देरी से

प्रताप राठी

जागते हो, इसलिए स्कूल भी देरी से पहुँचते हो। दुपहर को तुम्हारे अध्यापक ने तुम्हारी शिकायत की। तुम्हारा यह पिल्ला भी, जब देखो, सताता रहता है, काम करने नहीं देता। मुझे इससे चिढ़ हो गयी। इसे ले जाओ और गाँव के बाहर छोड़कर आना।''

राम की आँखों में आँसू भर आये। उसने बड़े ही दीन स्वर में कहा ''नहीं माँ, ऐसा मत कहो। पिल्ले को मैं अपने ही साथ रखूँगा।''

''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। सबेरे जागने के लिए बारंबार कहती रहती हूँ, फिर भी तुम्हें मेरी बातों की परवाह नहीं है। ऐसी हालत में मैं क्यों तुम्हारी बात सुनूँ? नहीं सुनूँगी'' उसने ज़ोर देकर कहा।

राम कुत्ते के पिल्ले को देखता हुआ ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। पिल्ला उसके चारों ओर घूमने लगा और लपककर उस पर गिरते हुए उसे ढाढ़स देने की कोशिश करने लगा। वह तरह-तरह से उसे सांत्वना देने लगा। राम ने उस रात को माँ का परोसा खाना भी नहीं खाया। पिल्ला भी बिना कुछ खाये कमरे के एक कोने में पड़ा रहा।

सबेरे घरेलू कामों से निपटकर जब राम की माँ वहाँ आयी वहाँ का दृश्य देखकर वह चकित रह गयी। राम नींद से जाग उठा था और पढ़ने लगा था। उसने माँ से कहा ''आज मुनमुन मेरे कंबल को अपने दांतों से खींचता रहा और मुझे सोने नहीं दिया। इसी तरह वह हर रोज़ मुझे नींद से जगायेगा। बिना देरी के पाठशाला जाता रहूँगा। मुझे जगाने के काम से भी तुम्हें छुट्टी मिल जायेगी। ऐसी स्थिति में मुनमुन हमारे ही साथ रहे तो इसमें तुम्हें क्या आपत्ति है?'' वह गिड़गिड़ाते हुए कहने लगा।

''ठीक है। सूर्योदय के पहले ही तुम जाग जाओगे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। पिल्ले को अपने ही घर में रहने देंगे'' माँ मुस्कुराती हुई बोली।

पालतू जानवर को, उसे प्यार से पालनेवालों के व्यवहार में थोड़ा भी परिवर्तन आ जाए तो वे ताड़ लेते हैं। यह बात राम और उसकी माँ भी अच्छी तरह से समझ गये।

यों समस्या का हल हो गया। अब राम की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने प्यार से मुनमुन को अपने पास रख लिया।
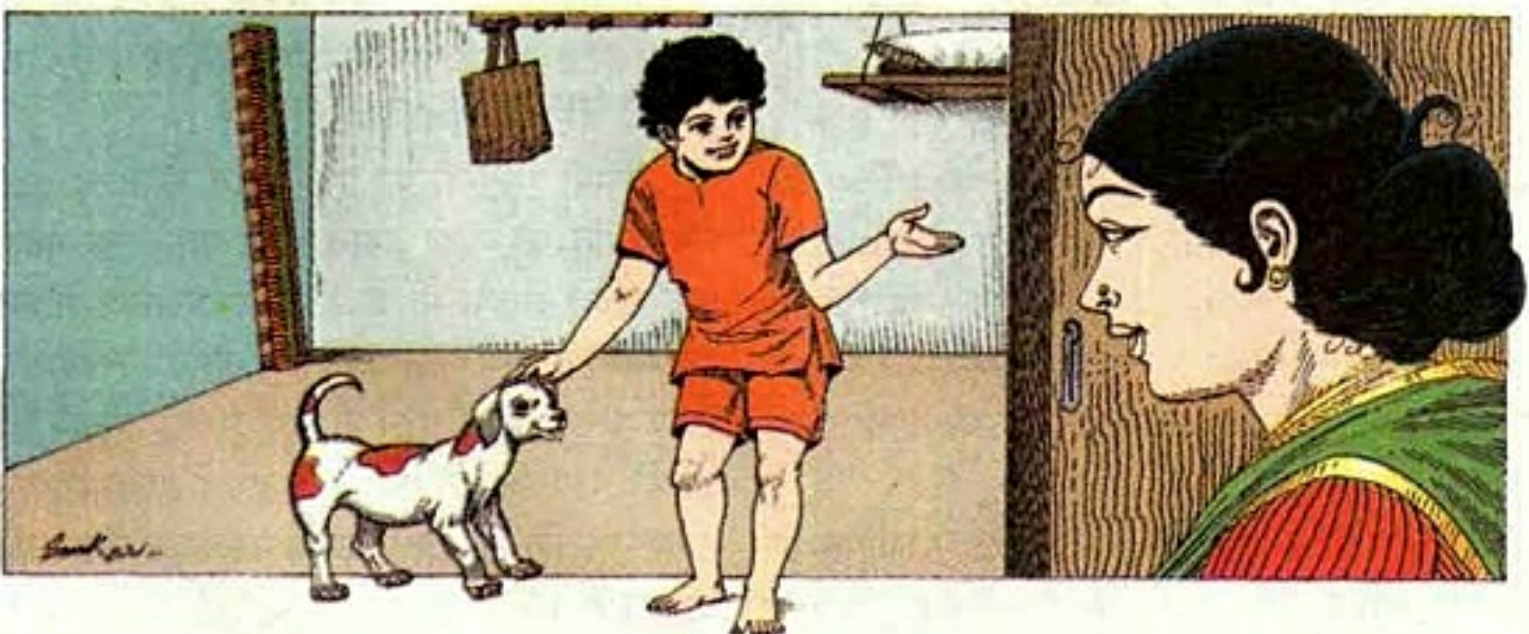
इस माह जिनकी जयंती है

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू बच्चों में चाचा नेहरू के नाम से प्रसिद्ध हैं । इनका जन्म १४ नवम्बर १८८९ में अलाहाबाद में हुआ । बच्चों के प्रति उनके प्रेम और स्नेह को देखते हुए सन् १९५७ से उनके जन्मदिन को बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

जवाहरलाल नेहरू के पिता, मोतीलाल नेहरू एक जाने-माने वकील एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता थे । उन्होंने अपने इकलौते बेटे जवाहरलाल की शिक्षा का प्रबंध १४ वर्ष की उम्र तक घर पर ही करवाया। इसके बाद उन्हें पढ़ने के लिए लंदन के नजदीक प्रसिद्ध हारोव स्कूल भेज दिया गया । जवाहरलाल नेहरू कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय से बैरिस्टर की स्नातक उपाधि प्राप्त कर १९१२ में भारत लौटे ।

जवाहरलाल नेहरू

आशा की जा रही थी कि वे अपने पिता के व्यवसाय में ही आगे बढ़ेंगे । परन्तु वकालत के पेशे को छोड़ वे अपने पिता की राजनीतिक गतिविधियों में सफलता पूर्वक कार्य करने लगे । उनके जीवन में एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना घटी जब वे काँग्रेस की लखनऊ बैठक के समय १९१६ में गाँधीजी से मिले । इससे उनके ऊपर बहुत प्रभाव पड़ा ।

शीघ्र ही वे पूरी तरह से राजनीति में शामिल हो गए । एप्रिल १३, १९१३ में एक ब्रिटिश अधिकारी जनरल डायर ने अमृतसर के निकट जलियाँवाला बाग में एक शाँति बैठक में हिस्सा ले रहे अनेक बूढ़े, वयस्क, औरतों तथा बच्चों पर गोली चलाने का आदेश दे दिया । जिससे लगभग चार सौ लोग उसी वक्त मारे गए और हजारों लोग घायल हो गए। जवाहरलाल ने इस क्रूरता को देख, दृढ़ निश्चय किया कि भारत में जब तक अंग्रेजों का राज्य समाप्त नहीं हो जाता, वे इन अत्याचारों का विरोध करेंगे।

इसके बाद उन्होंने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। १९२८ में वे भारतीय काँग्रेस के महासचिव बना दिए गए। अगले ही वर्ष वे उसके अध्यक्ष बन गए । उन्होंने असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए बार-बार गिरफ्तारी भी दी । यह उनके जीवन का दूसरा पहलू था।

१९४७ में भारत के स्वतंत्र होने पर वे भारत के प्रथम प्रधान मंत्री बने । १७ वर्षों तक उन्होंने राजनीति में एकक्षत्र राज्य किया और सामाजिक समस्याओं पर भी ध्यान देते रहे । २७ मई १९६४ में उनका स्वर्गवास हो गया ।

बीसवीं शताब्दी का एक महान व्यक्तित्व तथा विश्वशांति का बीड़ा उठाने वाला मार्गदर्शक नेहरू एक अच्छे लेखक भी थे । उनकी एकमात्र संतान इन्द्रागाँधी के नाम लिखे पत्रों का संकलन *"ग्लिम्पसेस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री"* पढ़ने के लिए अच्छी किताब है। उनकी *'आत्मकथा'* तथा *'डिस्कवरी आफ इंडिया'* नामक पुस्तकें वास्तव में उनके महत्वपूर्ण लेखन को दर्शाती है ।

प्रिय मित्रों,

चन्दामामा परिवार को बच्चों का यह नवम्बर विशेषांक प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है ।

इस अंक में आप, बच्चों द्वारा लिखी गई अनेक कहानियाँ पढ़ेंगे, जो भारत के कोने-कोने से हमें प्राप्त हुई हैं। ये कहानियाँ चन्दामामा द्वारा घोषित सृजनात्मक लेखन एवं चित्र प्रतियोगिता के उत्तर में बच्चों ने भेजीं हैं।

चित्र प्रतियोगिता के लिए चुने गए नन्हें कलाकारों द्वारा बनाए गए चित्रों से ही इन कहानियों को सुसज्जित भी किया गया है।

चन्दामामा परिवार आप सभी नन्हे कलाकारों को प्रतियोगिता में अपनी प्रवेशिका भेजने तथा हिस्सा लेने के लिए बधाई देता है । इसी प्रकार अपने कार्य को आगे बढ़ाएँ ।

आप लोगों में से जिनकी कहानियाँ और चित्र, प्रतियोगिता में शामिल नहीं किए जा सके, उन्हें मन छोटा करने की आवश्यकता नहीं है । सारी प्रवेशिकाएँ बहुत अच्छी थीं और हमें कहानियाँ चुनने में काफी कठिनाई भी हुई । हो सकता है, हमारी आगामी प्रतियोगिता में आप ही विजयी हों।

वे लोग जो अपनी परीक्षा तथा किसी अन्य कारण से प्रतियोगिता में चुने जाने के बाद भी हिस्सा नहीं ले पाए, उन्हें भी परेशान नहीं होना चाहिए । हमें आशा है कि भविष्य में हम आप लोगों के लिए और बहुत सारे अवसर प्रदान करेंगे ।

इस विशेषांक में आपकी कहानियों के अतिरिक्त आपके सबसे चहेते त्यौहार दिवाली के ऊपर भी कई कहानियाँ और लेख दिए गए हैं।

जैसा कि आप जानते है कि यह महीना पूरे तरीके से त्यौहारों का महीना है । हमने सोचा कि क्यों न आपको इस त्यौहार के बारे में और कुछ बताया जाए । जिससे आपकी जानकारियाँ बढ़ें। जब आप अगली बार पटाखे जलाने जाएँ तो आपको याद रहे कि दिवाली के पीछे और क्या क्या कहानियाँ और उद्देश्य है ।

अतः आगे बढ़ो और इन विशेष कहानियों और लेखों का आनन्द उठाओ । हमें आशा है कि जिस प्रकार इसे एकत्रित करने के समय हम लोगों ने आनन्द उठाया उसी प्रकार आप लोग भी इसे पढ़कर पूर्ण आनन्द उठाएँगे ।

आपके स्नेहिल संपादक,

विश्वम

भाग्यशाली ताबीज

नित्या त्रिपुरानेनी, यू.एस.ए.

एक समय की बात है, एक लड़की रहा करती थी, जिसका नाम नीना था । वह हिमालय के जंगलों में बसे एक गाँव में रहा करती थी । जो काफी शांत और खुशहाल था । उस गाँव का नाम गंगापुर था ।

नीना और उसकी छोटी बहन श्वेता अपनी माँ के बहुत बिमार हो जाने के कारण घर का सारा काम करती थीं । वे खाना पकातीं, छोटे से घर को साफ-सुथरा रखतीं । उनकी मां हमेशा सोई रहती और किताबें पढ़ती थीं । इसके अलावा वे नीना और श्वेता के स्कूल से मिले कार्य को देखतीं और जाँचती, संगीत सुनती, दवाईयाँ खातीं और अपने सेहत की जाँच के लिए समय पर डॉक्टर के पास जातीं। नीना और श्वेता हमेशा गांव के पास वाली झील पर अपने दोस्तों के साथ खेलने जाती थीं ।

एक दिन जब नीना बेरी की डालियों को ढूँढने के लिए लकड़ियाँ इधर-उधर कर रही तो उसने दूसरे पेड़ के पास से आती हुई चमक देखी । जिज्ञासावश वह वहाँ गयी और एक माला को उठा लिया । उसके हार्ट के आकार एक लॉकेट था जो सुनहरे रंग का था । सुनहरा रंग नीना के मुँह पर चमकने लगा । उसने उसे खोला और अंदर देखा। उसमें कुछ नहीं था । तब नीना ने उसे अपने एप्रेन की जेब में डाल लिया और वहाँ से चली गयी ।

घर आने पर उसने, जो भी बेरियाँ तोड़ी थीं उसे रसोईघर की मेज पर रख दिया । यह श्वेता का सातवाँ जन्म दिन था और नीना जानती थी कि आज उसे कुछ अधिक खाना बनाना पड़ेगा।

अब यह खाना, खाने का समय था । श्वेता बहुत ही खुश और उत्सुक थी । परन्तु नीना बहुत थक गयी थी । लेकिन उसकी सारी थकान तब गायब हो गई जब सभी लोगों

ने उसके खाने की बड़ाई की ।

खाना खतम हो चुका था, अब समय यह था कि सारे उपहार खोले और देखे जाएं । श्वेता ने बड़ी उत्सुकता से एक उपाहर का बाहरी कागज फाड़कर देखा । यह एक अन्जली गुड़िया थी । जो बहुत कम मिलती और बहुत महंगी थी । नीना ने कार्ड को देखा और तब उसे पता चला कि यह उसकी माँ ने दिया है।

'धन्यवाद माँ' और वह बहुत खुश हुई । तभी उसके चेहरे पर उदासी छा गई । "यह बहुत ही महंगी है । तुमने मुझे एक गुड़िया खरीदने के लिए इतना खर्चा क्यों किया?" "मेरे प्यारे बच्चों के लिए कुछ भी ज्यादा नहीं है ।" उनकी माँ ने श्वेता को गले लगाया । श्वेता ने एक और उपहार खोला। जिसके कागज पर चारों ओर गुलाब का फूल बना हुआ था । गुलाब श्वेता का मनचाहा फूल था । उसके अंदर एक संगीत का डिब्बा था और उसके चारों ओर नक्काशी की हुई थी । यह उपहार नीना ने दिया था ।" ओह धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद दीदी," श्वेता ने कहा ।" मैं इसे सम्भालकर रखूँगी। नीना मुस्कुराई "डिब्बे में लगी एक छोटी चाभी की ओर इशारा करते हुए कहा "बस तुम यह चाभी बाँयी ओर घुमा दोगी तो यह खुल जाएगा । तुम इसमें सारी धुने बजा सकती हो ।"

"एक मिनट रुको! ये दो उपहार किसने दिए है?" नीना ने कहा और दो उपहार उठा लिए । फिर देखा कि एक लॉकेट में नीना और उसके पिता की और दूसरी श्वेता और उसकी माँ की फोटो है।

एक और उपहार जो अभी तक बंद पड़ा था, उस पर चमेली के फूल बने हुए थे । यह श्वेता का मनचाहा फूल था। और उसमें निकला उपहार एक सुन्दर शीशे की डॉल्फिन थी । जो श्वेता का मनचाहा जानवर है।

Anjal Lumiya, Maharashtra

जल्दी ही श्वेता और नीना सोने के लिए चले गए । नीना ने सावधानी से लॉकेट को गहनों के डिब्बे में डाल दिया और अपने चादर में जाकर सो गयी ।

आज का दिन कितना अच्छा था । है कि नहीं नीना?" श्वेता ने पूछा । "हाँ क्यों नहीं," नीना ने कहा । "अच्छा अब सो जाओ श्वेता।" ठीक है ! शुभरात्रि" - "शुभरात्रि"

नीना नींद की प्रतीक्षा कर रही थी कि अचानक उसे याद आया और वह आश्चर्य में पड़ गयी । हो सकता है उस ताबीज के कारण ही हमारे घर में इतनी खुशियाँ आयीं । जो मुझे लकड़ियों में मिला था । सचमुच लॉकेट एक भाग्यशाली ताबीज ही प्रमाणित हुआ । जिससे उसकी माँ बिल्कुल अच्छी हो गयी और अब एक साधारण मनुष्य की भाँति अपना जीवन जी सकती है ।

संयम

शीतल देवदत्त वडगावे, महाराष्ट्र

अनिल और सुनिल दो भाई थे । वे बहुत गरीब थे, परन्तु उनमें शिक्षा प्राप्त करने और अपने पैरों पर खड़े होने की लगन थी । वे लोग एक स्कूल में पढ़ते और गरीब होने के कारण निःशुल्क छात्र-आवास में रहते थे । कुछ पैसे मिल सकें इसलिए वे एक दुकान में काम भी करते थे । जिससे कि वे अपनी स्कूल फीस जमा करवा सकें । परन्तु जो पैसा उनको मिलता था वह पूरा नहीं पड़ता था । इस प्रकार अध्यापक ने उन्हें स्कूल छोड़ने की आज्ञा दे दी । सुनिल और अनिल बहुत परेशान हुए । तब उन्हें याद आया कि उनके एक बहुत धनी चाचा हैं। शायद वे उनकी सहायता करें । इसी आशा को ले वे उन्होंने चाचा से बात करने का निर्णय लिया । उन्होंने अपने चाचा को एक पत्र लिखा और ५०० रुपए भेजने की प्रार्थना की । जिससे कि वे अपनी स्कूल की फीस भर सकें और अपनी पढ़ाई को जारी रखें । उनका चाचा बड़ा ही परोपकारी निकला । शीघ्र ही अनिल और सुनिल को चाचा द्वारा भेजा १०० रुपए मिला । सुनिल को सौ रुपए जैसी छोटी आवमनी पाकर बहुत दुःख हुआ । उसने अनिल से कहा "हमारे चाचा न जाने कितना पैसा रोज पेट्रोल पर खर्च कर देते हैं, परन्तु जब उनके जरूरतमंद भतीजों की सहायता करने की बात आयी तो वे इतने कंजूस हो गए ! वैसे भी यह पैसा हमारी कोई मदद नहीं कर सकता, उनका कर्जदार बनकर रहने से तो अच्छा है कि हम उनका पैसा वापस कर दें । उनकी यह कंजूसी भरी सहायता हमें नहीं चाहिए ।"

Agni Chemburkar, Maharashtra

लेकिन बड़ा भाई अनिल इतने जल्दी में कोई निर्णय नहीं लेता था । इसीलिए उसने अपने छोटे भाई से कहा कि सुबह तक इन्तजार करने के बाद ही हम कोई निर्णय लेंगे ।

शाम होते-होते सुनिल का गुस्सा काफी ठंडा हो गया और उसने महसूस किया कि उसे इस प्रकार का रुखा व्यवहार नहीं करना चाहिए था ।

दूसरे दिन सुबह अनिल ने सुनिल से कहा "कल तुम पैसा वापस भेजने की भारी भूल कर रहे थे । हमारे चाचा बहुत ही दयालु व्यक्ति हैं । जरा सोच के तो देखो कि बहुत सालों से हमने उनके बारे में कुछ नहीं पूछा, उनसे मिले भी नहीं । परन्तु आवश्यकता पड़ने पर हमने उनसे ५०० रुपए माँगे । एक पोस्टकार्ड के जवाब में कौन इतना सारा पैसा भेजेगा?"

उन्होंने कम से कम १०० रुपए तो भेजे और यह कोई छोटी राशि नहीं है । दुकानों में काम करके १०० रुपये कमाने में हमें एक सप्ताह लग जाता है । यदि हम इस सहायता का सदउपयोग करते हैं तो मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में भी वे हमारी सहायता करेंगे ।"

सुनिल अपने भाई की बातों से सहमत हो गया । उन्होंने उस पैसे से कुछ किताबें खरीदीं और स्कूल की फीस भी दी। उन्होंने बहुत लगन और कड़ी मेहनतकर पढ़ाई की और अच्छे अंकों से पास हो गए।

अनिल ने अपना अँक पत्र और प्रगति पत्र एक धन्यवाद पत्र के साथ अपने चाचा को भेजा । अनिल के चाचा को उनकी लगन और मेहनत को देखकर काफी प्रसन्नता हुई । वे इससे बड़े प्रभावित हुए । उन्हें यह जानकर बहुत संतोष हुआ कि उनके भतीजों ने न केवल पैसों का सही उपयोग किया बल्कि वे उनके प्रति आभारी भी हैं। उन्होंने तुरन्त अपने भतीजों को ३,००० रुपए भेजे और साथ में उनकी भविष्य की पढ़ाई का उत्तरदायित्व भी लिया ।

दोनों भाईयों ने कठोर परिश्रम से पढ़ाई की । अनिल डॉक्टर बना और सुनिल इन्जिनियर ।

बुद्धिमान सुमित्र

जी.के. प्रसाद, आन्ध्र प्रदेश
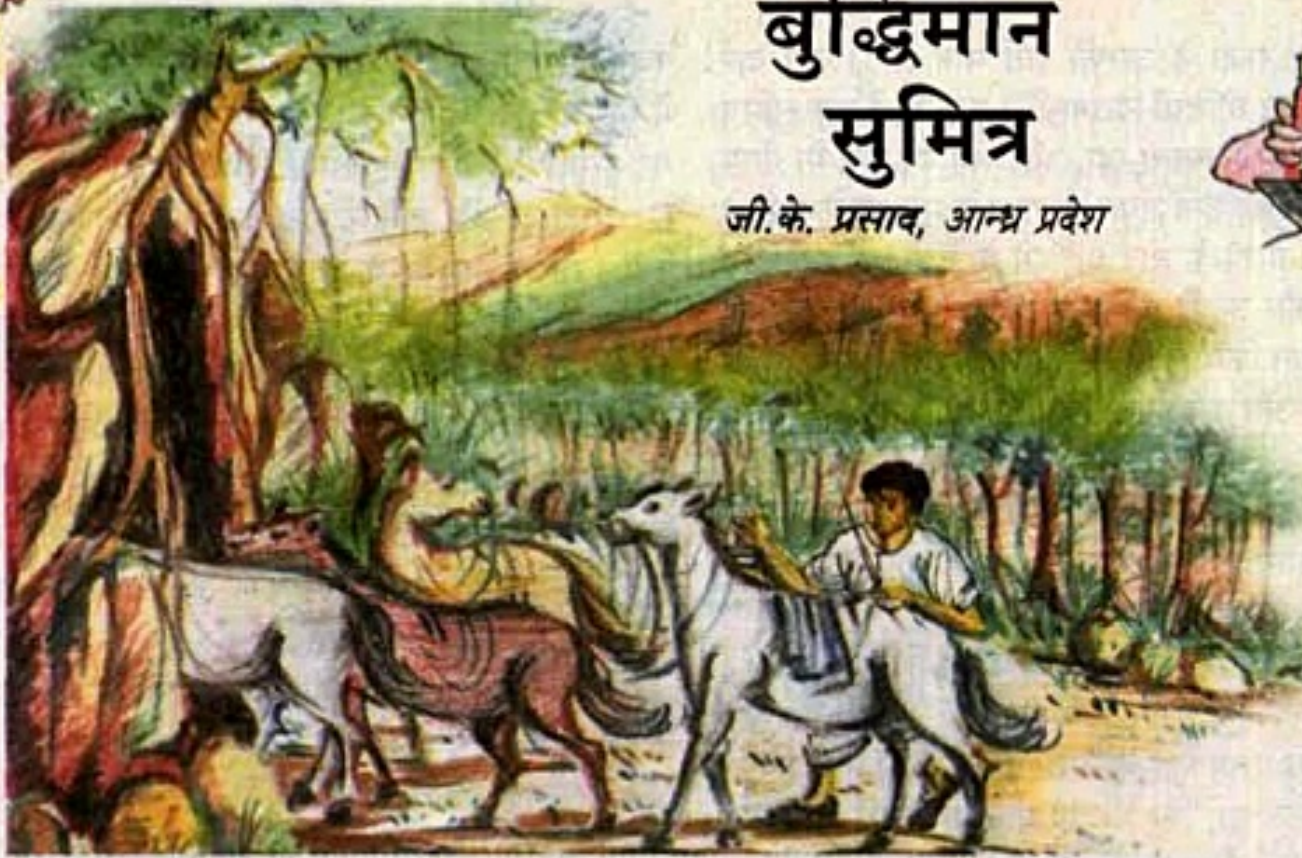
सुनंद, काशीलिका राज्य का राजा था । वह छोटा-सा राज्य था, इसलिए अड़ोस-पड़ोस के राज्यों के राजा बात-बात पर उसपर आक्रमण करके, राज्य की धन-राशि व मूल्यवान संपत्तियाँ लूट ले जाते थे । कभी-कभी तो राज्य को अपने अधीन करने के प्रयास भी करते रहते थे ।

पराक्रमी राजा सुनंद ने तीन बार शत्रुओं के आक्रमणों का सामना किया और अपने राज्य को बचाया । किन्तु लगातार होते युद्धों के कारण राज्य की आर्थिक स्थिति बिल्कुल अस्त व्यस्त हो गयी । प्रजा में अकाल के कारण हाहाकार मच गया । राजा सोच में पड़ गया कि प्रजा का उद्धार कैसे हो ! इस समस्या का परिष्कार कैसे हो? एक दिन उसके अनुभवी वृद्ध मंत्री ने सलाह दी ''महाराज, आपके पिताश्री के शासन-काल में कौंडिन्य देश के राजा ने हमारे देश पर आक्रमण किया और वे हमारी संपत्तियों को लूटकर ले गये । लूट के माल को वे अपने देश तक सुरक्षित ले जा नहीं पाये तो उन्होंने वह संपत्ति उत्तरी सरहद के जंगलों के बीच स्थित एक गुफ़ा में छिपा दी । उसके बाद वे वहाँ नहीं आये । उन निधियों को हम ले आ पायेंगे तो हमारी समस्याएँ हल हो जायेंगी और हमारी प्रजा भी सुखी रहेगी ।''

''यह तो आपको विदित है कि जो भी उस गुफ़ा में जाता है, लौटकर नहीं आता । फिर यह कैसे संभव होगा'' सुनंद ने मंत्री से पूछा ।

''हाँ, यह सच है । पर यह बहुत समय के पहले की बात है । अब कोई न कोई ऐसा युवक तो ज़रूर होगा, जो यह खतरा मोल लेने के लिए तैयार हो ! आप घोषणा कर दीजिये कि जो यह काम सफलतापूर्वक कर पायेगा, वह राज्य का युवराज बनेगा । आप भी निःसंतान हैं, इस प्रकार एक योग्य उत्तराधिकारी का चुनाव भी हो सकता है'' मंत्री ने कहा ।

राजा को मंत्री की यह सलाह सही लगी । उसने उसी प्रकार घोषणा भी करवायी ।

एक सप्ताह के बाद सुमित्र नामक एक युवक यह चुनौती स्वीकार करने, दरबार में आया । उसने कहा ''मैं निधियों को लाने का भरपूर प्रयत्न करूँगा। परंतु इसके लिए प्रसव के लिए तैयार दस गर्भधारित घोडियों की आवश्यकता है ।''

राजा ने उसकी शर्त मान ली । उसे दस गर्भधारित घोडियाँ दिलवायीं । कुछ दिनों तक सुमित्र उन्हें चारा खिलाता रहा, और जब वे प्रसव के योग्य बनीं तब वह उन्हें जंगल की गुफ़ा के मुखद्वार के पास ले गया । प्रसव के बाद घोड़ियों के बच्चों को वहीं छोड़ दिया और उनकी रखवाली करने के लिए कुछ सैनिकों को तैनात किया । फिर उसने एक मशाल अपने हाथ में संभाली और दस घोड़ियों को लेकर गुफ़ा के अंदर चला गया ।

''आज तक जो भी गुफ़ा के अंदर गया, वापस नहीं आया । परंतु तुम्हारा बाहर आना कैसे संभव हुआ'' मंत्री ने सुमित्र से पूछा ।

''बड़ों का कहना है कि मादी घोडियाँ सूँघकर पहचान जाती हैं कि उनके बच्चे कहाँ हैं । इसीलिए मैंने राजा से प्रसव के लिए तैयार दस घोड़ियाँ मांगीं । गुफ़ा में अंधकार था, फिर भी उन घोडियों ने गंध द्वारा जान लिया कि उनके बच्चे कहाँ हैं । इसीलिए वे आसानी से बाहर आ पायीं । घोडे पर बैठकर मैं भी सुरक्षित बाहर आ गया ।'' सुमित्र ने कहा ।

फिर उसने आगे कहा ''गुफ़ा में जहाँ देखो, वहाँ मानवों के अस्थिपंजर पड़े हुए थे । वे उन लोगों के अस्थिपंजर होंगें, जो इसके पहले निधियाँ ले जाने उस गुफ़ा में घुसे थे । बाहर आने का रास्ता उन्हें मालूम नहीं था, इसलिए वे वहाँ फंस गये और मर गये ।

थोड़ी दूर और जाने के बाद धन-राशियाँ दिखायी पड़ीं । सुवर्ण आभूषण के ढेर के ढेर वहाँ बिखरे पडे हुए थे । मशाल के उजाले में मैंने उन्हें थैली में भर दिया और घोड़ियों की पीठों पर लाद दिया । लेकिन अचानक मेरी मशाल बुझ गयी । अंधेरा ही अंधेरा था । मैंने जिस बात की कल्पना की वही हुआ । गंध द्वारा घोड़ियाँ जान गयीं कि उनके बच्चे कहाँ है और वे सब की सब बाहर आ गयीं । घोड़ियों ने मेरे लिए यह काम आसान कर दिया और आपका भी काम हो गया ।''

राजा ने उसका भव्य स्वागत किया और अपने वादे के मुताबिक उसे युवराज बनाया । सबने उसके साहस और अक़्लमंदी की भरपूर प्रशंसा की ।

तब से काशीलिका राज्य की आर्थिक स्थिति सुधर गयी और प्रजा आराम से रहने लगी ।
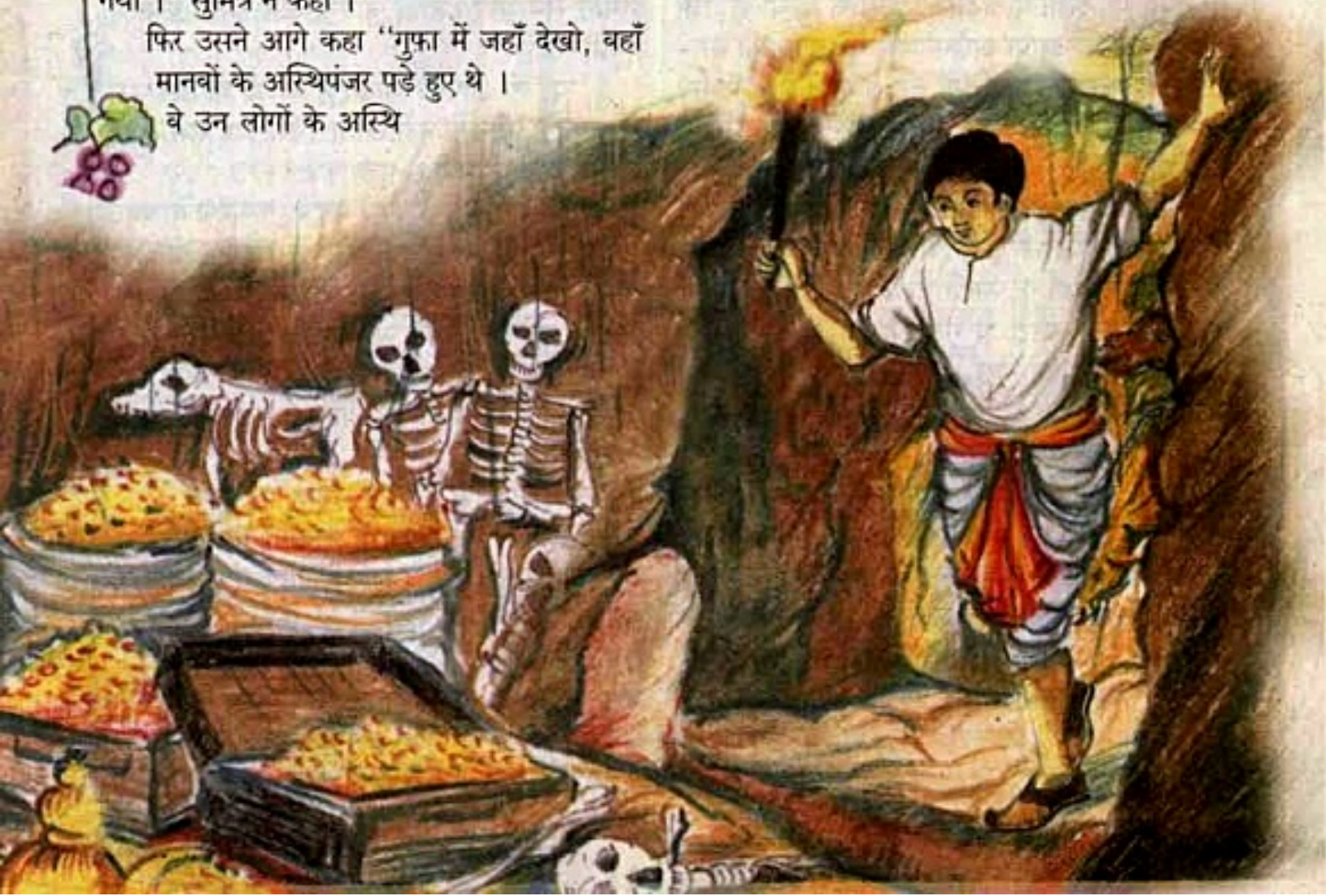
सच्ची खुशी

- अनुभव मौर्या, उत्तर प्रदेश

राजीव आज बहुत प्रसन्न था, आखिर दीपावली जो आ गयी थी । वह हर साल आतिशबाजी की दुकान लगाता था । उसने इस बार भी आतिशबाजी की दुकान लगायी थी । उसकी दुकान खूब जोरों से चल रही थी । और क्यों न चले, उसके जैसा विश्वसनीय तथा टिकाऊ सामान पूरे बाजार में मिलना मुश्किल था ।

पिछली बार तो उसे शुद्ध आठ सौ रुपयों का लाभ हुआ था जिससे उसने अपने लिए पढ़ने-लिखने के लिए कापी किताबें खरीदीं तथा उन्हीं पैसों से अपनी व अपनी बहन की फीस भी जमा की । बाकी बचे पैसों में से कुछ बैंक में जमा करवा दिए तथा शेष अपने माता-पिता को घर के खरचे के लिए सौंप दिये । उस दिन राजीव के माता-पिता खुशी से फूले नहीं समा रहे थे । इससे उत्साहित हो राजीव ने इस बार दुगुने जोश से दुकान लगायी थी ।

६-७ महीने पहले राजीव के पिता के गम्भीर रूप से बीमार हो जाने के कारण उन्हें अपनी खेती की जमीन भी बेचनी पड़ी, जो उसके घर का खर्च चलाने का एक मात्र साधन थी । इससे राजीव के घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी । घर की हालत देखते हुए उसकी पढ़ाई भी बाधित हो गई । घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने से पढ़ाई में व्यवधान न पड़े, वह ट्यूशन पढ़ाने लगा । उसकी लगन व मेहनत के कारण ट्यूशन में पढ़ने वाले बच्चे भी बढ़ गए थे, जिससे उसे प्रति माह ९५० रुपया प्राप्त हो जाते थे । उसके इस कार्य से घर की स्थिति जल्दी ही सुधर गई। ट्यूशन से प्राप्त पैसों से अच्छी दवा मिल जाने और समय पर इलाज हो जाने के कारण राजीव के पिता जी की हालत कुछ समय में ठीक हो गयी । दो-तीन माह में राजीव ने सारा कर्ज भी उतार दिया ।

Agni Chemburkar, Maharashtra

घर की स्थिति अब अच्छी हो जाने के कारण राजीव ने इस बार दीवाली में पिछली बार से अधिक बड़ी व सुन्दर दुकान लगायी थी । पहले ही दिन राजीव को ५३० रुपयों का अच्छा खासा लाभ हुआ । दीपावली को अभी तीन दिन बाकी थे । दूसरे दिन तो उसके आने के पहले ही उसकी दुकान पर बहुत भीड़ लग गयी। बड़ी मुश्किल से सभी को सामान दिया जा सका। दूसरे दिन प्राप्त लाभ से वह कल से कुछ अधिक ही प्रसन्न था । राजीव उन रुपयों को लेकर जल्दी ही घर पहुंच जाना चाहता था । अभी

वह कुछ ही दूर चला था कि उसने एक घर से रोने की आवाज सुनी । वह अपने आपको वहाँ जाने से रोक न सका । वह देखता है कि तीन छोटे-छोटे बच्चे अपनी माता से पटाखों व मिठाइयों की जिद कर, रो रहे थे। शायद घर की आर्थिक स्थिति ठीक न थी । वह रास्ते भर सोचता रहा "यदि उसके घर की हालत ऐसी होती तो क्या इन सबके लिए मेरा मन न ललचाता? फिर ये तो मासूम बच्चे हैं । क्या हम इनकी सहायता नहीं कर सकते?"

राजीव यह सोच कर अत्यन्त भावुक तथा गंभीर हो गया था । यह बात उसने अपने पिता से भी कही तो उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और उनकी सहायता करने के लिए प्रेरित किया ।

सुबह वह जल्दी ही दुकान पर पहुंचा, परन्तु पूरा दिन राजीव का दुकान में मन नहीं लगा जब कि पहले कुछ दिनों से ग्राहक भी अधिक आ रहे थे। शाम होते ही उसने अपनी दुकान बन्द कर दी और एक झोले में फुलझड़ियां तथा मिठाई भरकर उस घर की ओर चल पड़ा, जहाँ वह कल गया था । उस घर पर पहुँचते ही वह घर में बैठी उस बूढ़ी मां के चरण स्पर्श कर उसके हाथों में वह थैला रख दिया । वह बूढ़ी मां आवाक् तथा आश्चर्य चकित होकर उसे देखने लगी और कहा "बेटा-यह सब क्या है? और तुम कौन हो?"

राजीव ने कहा - "माँ जब मैं यहाँ से कल गुजरा तो आपके इन छोटे मासूम बच्चों की रुलाई मुझसे देखी नहीं गयी और आपने मुझे बेटा भी कहा है । क्या कोई बेटा अपनी मां की सहायता करने का अधिकार नहीं रखता? माँ अपने इस बेटे की यह तुच्छ भेट अस्वीकार मत करना ।" उसने उस बूढ़ी औरत से पूछा "यदि आप मेरी जगह होतीं और मैं गरीब और असहाय होता तो आपका दिल क्या कहता?" ऐसा सुनते ही उस बूढ़ी मां के आंखों
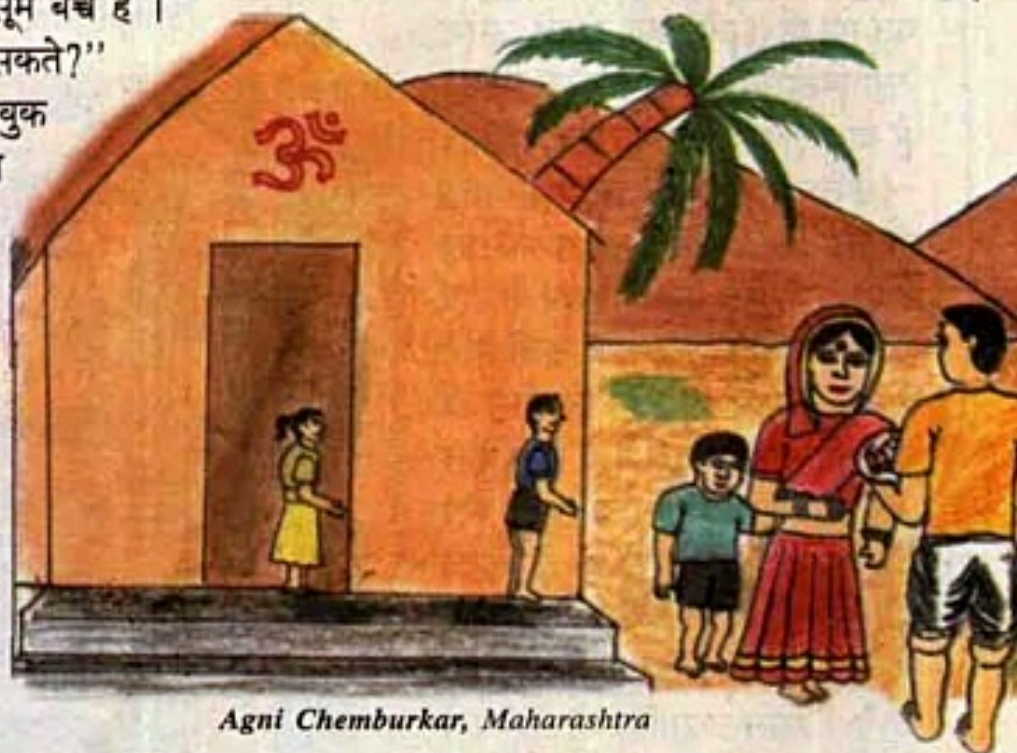
Agni Chemburkar, Maharashtra

में खुशी के आंसू छलछला आए और उसने कहा - "बेटा तेरे जैसे पुत्र को पाकर कौन माँ सुखी नहीं होगीं । बेटा तुम तो बहुत दयालु और महान् हो ।" वह मां राजीव को ढेरों आशीर्वाद देने लगी। तभी वहाँ उसके तीनों बच्चे भी आ गए । वह पटाखे तथा मिठाई देखकर फूले नहीं समा रहे थे । उनके चेहरे पर प्रसन्नता के भाव देखकर राजीव की खुशी का ठिकाना नहीं रहा । राजीव इन खुशियों से बिदाई लेता हुआ पुनः अपनी राह पर प्रसन्न चित्त होकर बढ़ने लगा । इसी प्रकार पुनः एक और घर। अपने घर ।

दुनिया की रीति

मुहम्मद शिराज, आन्ध्र प्रदेश

बहुत समय पहले जब सभी पशु-पक्षी मनुष्यों की भाँति बोल सकते थे । उसी समय की बात है, एक गाँव में एक लड़का था । उसे निकट के गाँव में स्थित विद्यालय जाने के लिए एक जंगल से हो गुजरना पड़ता था । एक दिन ऐसा हुआ कि जब वह स्कूल से वापस घर जा रहा था, तो उसने निकट की झील में एक मगरमच्छ के रोने की आवाज सुनी ।

''मेरी सहायता करो!'' मगरमच्छ चिल्लाया ।

''तुम्हारी समस्या क्या है?'' लड़के ने उससे पूछा।

''मैं एक जाल में फँस गया हूँ, कृपया मुझे बचा लो।'' वह फिर रोने लगा ।

''लेकिन तुम मुझे मार डालोगे!'' आश्चर्य प्रकट करते हुए लड़के ने कहा ।

''नहीं मेरा विश्वास करो, मैं ऐसा नहीं करूँगा । मेरे पास आओ ।'' मगरमच्छ ने कहा ।

इस प्रकार वह लड़का मगरमच्छ के पास गया और मगरमच्छ ने उसे अपने लम्बे जबड़े में पकड़ लिया ।

''मेरी अच्छाई का बदला तुम इस प्रकार मुझे दे रहे हो?'' लड़के ने पूछा ।

'बिलकुल' मगरमच्छ ने अपने मुंह के एक कोने से आवाज निकाली ।

''यही दुनिया की रीति है ।''

''मैं इसमें विश्वास नहीं करता'' लड़के ने कहा।

इस प्रकार मगर मच्छ ने निर्णय लिया कि वह तब तक लड़के को नहीं खाएगा, जब तक कि यहाँ से गुजरने वाले पहले तीन व्यक्तियों का विचार न जान ले ।

उस रास्ते से सबसे पहले एक गधा आया । जब उसने समस्या सुनी तो कहा कि उसके मालिक ने उसे तब तक बहुत प्यार से रखा जब वह काफी जवान था । परन्तु ज्यों ही वह बूढ़ा हो गया उसे भगा दिया ।

उसके बाद वहाँ से एक घोड़ा गुजरा । उसने भी गधे के विचार से सहमति व्यक्त की ।

इसके बाद वहाँ से एक खरगोश गुजरा। जब उसने लड़के की समस्या सुनी तो कहा कि ''मैं शुरु से अंत तक की कहानी जब तक विस्तार से नहीं सुन लेता, मैं कोई निर्णय नहीं ले सकता ।''

इस तरह मगरमच्छ ने सत्य बताने के लिए लड़के को छोड़ दिया । तब चालाँक खरगोश ने लड़के से पूछा ''क्या तुम्हारे गाँव वाले मगरमच्छ का माँस पसंद करते हैं?''

''क्यों नहीं !'' लड़के ने उत्तर दिया ।

''तो जाओ और लोगों को बुला लाओ।'' खरगोश ने कहा और अपने रास्ते चल दिया ।

लड़का गया और बहुत सारे लोगों के साथ वापस

Pritam Das, West Bengal

आया । उसके गाँव वाले अपने साथ एक शिकारी कुत्ता भी लेकर आए थे । उस कुत्ते ने खरगोश का पीछा करना शुरु कर दिया ।

''इसका मतलब मगरमच्छ बिल्कुल सही कह रहा था, कि ''यही दुनिया की रीति है,'' लड़के ने सत्य जानने के बाद महसूस किया ।

देशभक्त गंगू

- *फाणि श्याम, आन्ध्र प्रदेश*

गंगू, पांडेय देश का प्रसिद्ध लुटेरा था। उसका नाम लेने मात्र से बच्चे थरथर कांपते थे। उसको पकड़ने का बहुत प्रयास किया गया। परन्तु सब व्यर्थ साबित हुए।

एक दिन रात को गंगू नगर के प्रमुख व्यापारी का घर लूट कर घर से बाहर आ रहा था कि सैनिकों ने उसे देख लिया। परन्तु वह घोड़े पर सवार होकर भाग निकला। राजधानी की सरहद पर पहुँचने के बाद उसने अंधेरे में घोड़े को छोड़ दिया और एक मंदिर में छिप गया। थोड़ी देर बाद पांडेय देश का सेनापति दो सैनिकों के साथ वहाँ आया। पहले से ही कोंकण देश के गुप्तचर उसकी प्रतीक्षा में वहाँ थे। पांडेय देश और कोंकण देशों के बीच लंबे समय से शत्रुता चली आ थी।

पांडेय देश के सेनापति ने उन गुप्तचरों को कुछ कागज़ दिये और कहा "इन्हें अपने राजा के सुपुर्द कीजिये। पांडेय देश के राजा सूर्यसेन की मृत्यु के बाद चंद्रसेन सिंहासन का उत्तराधिकारी बना है। युद्ध-कला से वह बिल्कुल अनभिज्ञ है। पांडेय देश के सेना-बल के विवरण इसमें हैं। अब पांडेय देश पर आक्रमण किया जाए तो जीत निश्चित है।"

इन बातों को सुनकर वहां छिपा गंगू चौंक उठा। छलांग भरकर उसने गुप्तचर के हाथों से उन कागज़ों को छीन लिया और घोड़े पर सवार होकर तेज़ी से राजधानी की

ओर निकल पड़ा ।

गुप्तचरों और सैनिकों ने उसका पीछा किया। उसपर तलवारें फेंकीं तो उनके द्वारा फेंकी गयी एक तलवार से गंगू घायल हो गया । उसके शरीर से रक्त, बहने लगा, फिर भी उसने अपनी हार नहीं मानी । वह हताश नहीं हुआ । उसने सीधे राजभवन में प्रवेश किया और उन कागज़ों को राजा के सुपुर्द किया । फिर उसने पूरा विवरण राजा को कह सुनाया ।

राजा की आज्ञा के अनुसार सैनिकों ने गुप्तचरों, सेनापति और उसके साथ आये दो सैनिकों को क़ैद कर, उन्हें जेल में डाल दिया । राजा पशोपेश में पड़ गये कि अपने प्राणों की भी बाज़ी लगाकर देश को बचानेवाले लुटेरे गंगू को पकड़कर सज़ा देनी चाहिये या उसे छोड़ देना चाहिये?

इस धर्मसंकट में पड़कर राजा रात भर सो नहीं पाए। वे अशांत भाव से कक्ष में इधर-उधर टहल रहे थे तो उन्हें एक तालपत्र दिखायी पड़ा । उन्होंने उसे उठाया और पढ़ने लगे । मरने के पहले उनके पिताश्री ने उसमें शासन-संबंधी सिद्धांत लिख रखे थे । पहले ही पन्ने में लिखा हुआ था "देशभक्ति से बढ़कर कोई उत्तम गुण नहीं है ।" अब राजा ने निर्णय लेने में विलंब नहीं किया ।

राजा ने दूसरे ही दिन भरे दरबार में देशद्रोहियों को फांसी की सज़ा सुनायी । परिस्थितियों के प्रभाव से लुटेरे बने गंगू को माफ़ कर दिया और राजभवन में ही उसे नौकरी दी, क्योंकि उसी की देशभक्ति ने देश को शत्रुओं से बचाया ।

राजा का रूमाल

शैलबाला मोहन्ती, ओरिसा

बहुत दिनों पहले एक राजा रहता था, जिसे शिकार पर जाना बहुत पसंद था । वह जब भी शिकार पर जाता, भेस बदल कर जाता था । एक दिन वह शिकार खेलते-खेलते जंगल में बहुत दूर निकल गया और रास्ता भूल गया । अब वह वहाँ पहुँच गया जहाँ से दूसरा राज्य आरम्भ होता था ।

Sarthak Sobhana Satpathy, Orissa

यहाँ-वहाँ घूमते-घूमते उसे बहुत प्यास लग गई । इसलिए वह किसी तालाब और कुँए की तलाश करने लगा । बहुत देर भटकने के बाद उसे एक झरना दिखाई पड़ा । जैसे ही वह एक घूँट पानी पी रहा था । उसे जोर से हँसने की ध्वनि सुनाई पड़ी । वह अपने चारों तरफ देखने लगा और सोचने लगा कि आवाज कहाँ से आयी । तभी उसने देखा कि कुछ लड़कियाँ नदी में नहा रही थीं। उन लड़कियों में एक बहुत ही सुन्दर थी ।

थोड़ी-सी पूछ-ताछ के बाद पता चला कि वह लड़की उस राज्य की राजकुमारी है । राजा ने अभी तक अपनी वास्तविक राजकुमारी और उसकी सहेलियों के समक्ष उजागार नहीं किया । जब वे पानी से बाहर आयीं तो उसने अपनी इच्छा उनके सामने रखी और कहा कि "मैं राजकुमारी से विवाह करना चाहता हूँ ।" राजकुमारी ने लजाते हुए उत्तर दिया और कहा कि "आप मेरे पिताजी से बात करें। वही मेरे अच्छे और बुरे का निर्णय लेगें।"

इस प्रकार राजा उस राजकुमारी के राज्य में गया और उसके पिता से कहा "मैं आपकी पुत्री से विवाह करना चाहता हूँ ।" बूढ़े राजा ने अपनी बेटी के योग्य वर ढूँढने में कोई भी पूछ-ताछ नहीं की । वह बस इतना जानना चाहता था कि वह किस प्रकार अपनी आजिविका कमाता है? "मैं अच्छी चित्रकारी कर लेता हूँ और कढ़ाई का काम भी," राजा ने कहा । वह बूढ़ा राजा इतने से ही संतुष्ट हो गया । जल्दी ही राजकुमारी और भेस बदले राजा की शादी हो गई । तब वे राजा के महल में वापस आ गए ।

एक दूसरे दिन जब राजा पुनः शिकार के लिए गया तो एक गाँव में कुछ लोगों ने उसे रोक लिया । वह गाँव डाँकुओं के एक गिरोह द्वारा लूट लिया गया था । भेस बदले होने के कारण डाकू राजा को पहचान न सके । राजा को बंधक बनाकर जंगल में स्थित अपने अड्डे पर ले गए ।

राजा ने कहा कि उन्हें देने लेने के लिए उसके पास कोई धन-धन नहीं है। परन्तु डाकू इससे संतुष्ट नहीं हुए । एक सप्ताह यूँ ही बीत गया । डाकुओं

ने राजा को खाना खिलाया, उनकी देख भाल करते रहे, जब कि वह बार-बार यही कहता रहा कि उसके पास कोई धन सम्पत्ति नहीं है । आखिर में राजा ने डाकुओं को एक सलाह दी कि ''तुम लोग मुझे कुछ सादे रूमाल लाकर दो। मैं उन पर कढ़ाई करके दूँगा। उन्हें ले जाकर तुम लोग महल में बेच देना, जो पैसे मिलें उसे अपने पास रख लेना । क्योंकि रानी कढ़ाई की हुई रूमालों को बहुत पसंद करती हैं।

डाकू इस बात से सहमत हो गए । उन्होंने राज्य की सभी कपड़े की दुकानों को लूटा और राजा को बहुत सारी रूमाल लाकर दी । राजा ने बड़े धैर्य से उन रूमालों पर सुन्दर नकासी वाली कढ़ाई की और कुछ शब्दों को भी उन पर काढ़ा । अनपढ़ डाकू उन शब्दों को पढ़ नहीं सके, बल्कि उन्होंने उसे कढ़ाई का हिस्सा और नकाशी समझ लिया । वे उन रूमालों को बेचने के लिए रानी के पास ले गए ।

जैसे ही रानी ने उन्हें देखा तो उसे अपने पति के हाथ की कारीगरी की याद आ गई । परन्तु जब उसने उन रूमालों पर बने शब्दों को पढ़ा तो वह समझ गई कि उसका पति मुसीबत में है और सहायता के लिए यह समाचार भेज रहा है । उसने रूमालों को खरीदकर एक साथ मिलाकर देखा और जान गई कि वास्तव में उसके पति के साथ कोई घटना घटी है। उसने तुरंत अपने सिपाहियों को सावधान कर दिया, और सिपाहियों ने डाकुओं के अड्डे का पता लगा लिया । इस प्रकार राजा सकुशल लौट आया और डाकू कैद कर लिए गए।

दिवाली की पौराणिक कथाएं

भगवान राम, कृष्ण, महाबली, यम तथा इन्द्र और देवी काली, ये नाम मात्र, भारतीय पौराणिक कथाओं में ही नहीं आते बल्कि ये भारत के सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्यौहार दिपावली से सम्बन्ध रखते हैं ।

पूरे भारत में दिवाली का पर्व विभिन्न तरह से मनाया जाता है । दिवाली के पीछे बहुत सारी मान्यताएं और कथाएं प्रचलित हैं। दिवाली का नामकरण दिपावली से किया जाता है । जिसका अर्थ है दीपों की पंक्ति । यह पर्व दशहरा के बीस दिन बाद कार्तिक अमावश्या को मनाया जाता है । जो प्रतिवर्ष अक्टूबर अथवा नवम्बर माह में पड़ता है ।

रामायण के अनुसार राम अपनी पत्नी सीता तथा छोटे भाई लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष के बनवास के बाद अपने राज्य अयोध्या वापस आए थे । वहाँ की प्रजा ने पूरे नगर को दीपों से सजाकर उनका स्वागत किया । इस प्रकार राम के लौटने पर दिवाली उत्सव मनाया गया और यह परम्परा आरम्भ हो गयी ।

उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में दिवाली का पर्व पाँच दिनों तक चलता रहता है । अमावश्या के दो दिन पूर्व ही धनतेरस से त्यौहार आरम्भ हो जाता है । **धनतेरस** के दिन लोग अनिवार्य रूप से नए बर्तन खरीदते हैं । जिसे दिवाली के दिन पूजा-पाठ के लिए प्रयोग में लाया जाता है । इस दिन लोग देवताओं के चिकित्सक देवता धनवंतरी की पूजा करते हैं । यह माना जाता है कि अमृत पाने हेतु जब देवता और असुर समुद्र का मंथन कर रहे थे, तभी धनवंतरी भी नवरत्नों के साथ बाहर आए ।

इस दिन को धन त्रयोदशी के नाम से भी मानाया जाता है । कुछ सम्प्रदायों के लोग अपने पूरे घर को दीपों से सजाते हैं । जिसे **यम दीप** कहा जाता है । माना जाता है कि एक राजकुमार की कुण्डली में यह लिखा गया था कि वह अपने विवाह के चार दिन के बाद साँप के काटने से मर जाएगा । विवाह के बाद उसकी पत्नी को जब यह बात पता चली तो वह बहुत दुःखी हुई । उसने पति की रक्षा हेतु विवाह के चौथे दिन अपने पूरे घर को दीपों से सजा दिया।अपने शयनकक्ष में उसने सारे आभूषणों आदि को रखकर पूरी रात भजन

किर्तन तथा धार्मिक कहानियाँ पढ़ती रही । वह बहुत ही सुरीला गाती थी । जब मृत्यु के देवता यम ने उसके पति को लेने के लिए साँप का रूप धारण कर उसके कक्ष में प्रवेश किया तो, वहाँ का नजारा देखते ही रह गए । यम उस स्त्री के गायन तथा पूजा से काफी प्रसन्न हुए। रात भर वे उसका गीत सुनते रहे और प्रात:काल स्वयं चले गए । इस प्रकार राजकुमार की रक्षा हुई। इसीलिए इस पर्व को **मृत्यु पर विजय** का प्रतीक भी माना जाता है और रातभर दीप जलने के कारण दिवाली कहा जाता है ।

दूसरे दिन का पर्व **नरकचतुर्दशी** के नाम से जाना जाता है। उस दिन एक भयंकर युद्ध के बाद भगवान कृष्ण ने नरकासुर का वध कर डाला था । कुछ लोग इसे **रूप चतुर्दशी** भी कहते हैं। क्योंकि इस दिन जल में सभी जड़ी-बूटियाँ मिलाकर स्नान किया जाता है ।

तमिलनाडु में लोग अमावश्या लगने से पूर्व ही स्नान कर लेते हैं। जिसे गंगा स्नान कहा जाता हैं। इस दिन लोग पवित्र गंगा में स्नान करना काफी महत्वपूर्ण मानते हैं। स्नान के बाद लोग नए कपड़े पहनते हैं तथा घर पर बनी हुई विशेष मिठाई खाते हैं जिसे '**लेहियम**' कहा जाता हैं।

तीसरे दिन अमावश्या को दिवाली मनाई जाती है । जिसे **लक्ष्मी पूजा या चौपड़ पूजा** कहते हैं । उत्तर भारत में व्यापारी समाज में यह पूजा काफी प्रचलित है । इस दिन सभी लेखा-जोखा की पुस्तकें बंद करके नई पुस्तकें आरम्भ की जाती हैं । लोग अपने घरों को स्वच्छ कर नए कपड़े पहनकर पूजा करते हैं। घरों में दिया जलाकर लक्ष्मी का स्वागत किया जाता है ।

इसी प्रकार दिवाली के दूसरे दिन **गोवर्धन** पूजा मनाई जाती है । जो एक प्रकार से दिवाली का ही हिस्सा है । कहा जाता है कि गोकुल निवासी प्रतिवर्ष वर्षाकालीन के बाद इन्द्र का धन्यवाद करने हेतु पूजा करते थे । परन्तु कृष्ण ने उन्हें उस दिन पूजा नहीं करने दी । उन्होने गोवर्धन पर्वत की पूजा पर बल दिया । जिससे क्रोधित हो इन्द्र ने अपने वर्षा-दूतों को भेज, गोकुल को जलमग्न कर दिया । लोगों में हाहाकार मच गया । गोकुल वासियों की रक्षा हेतु भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा पर उठाकर उसका छत्र बनाया, जिससे पशुओं तथा मनुष्यों की रक्षा हो सकी । इस प्रकार **गोवर्धन पूजा** की परम्परा आरम्भ हुई ।

भाई दूज इस त्यौहार का पाँचवा दिन माना जाता है । कहा जाता है कि मृत्यु के देवता **यम** उसी दिन अपनी बहन **यमी** के घर उससे मिलने के लिए गए । भाई कोदेख यमी बहुत प्रसन्न हुई । उसने खुशी में आकर अपने भाई को तिलक लगाया और उस दिन को उत्सव जैसा मनाया । उन लोगों ने एक दूसरे को अपने स्नेह का प्रतीक मानकर कुछ उपहार भी दिया । तभी से यह भाई दूज की परम्परा चली आ रही है । इस दिन भाई अपनी बहनों के घर जाकर उन्हे उपहार देते हैं और तिलक लगवाते हैं ।

नरकासुर वध

(दिवाली की एक पौराणिक कथा)

हमारे त्यौहारों में से दीपावली का अपना विशिष्ट स्थान है। दीपावली को लेकर अनेकों कथाएँ प्रचलित हैं। माना जाता है कि दीपावली के दिन जिस घर में दीप जलाये जाते हैं, उस घर में लक्ष्मी प्रवेश करती हैं। परन्तु दिवाली के एक दिन पूर्व श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर का बध किए जाने के कारण नरकचतुर्दशी मनाई जाती है। इस प्रकार दिवाली की कथाओं में यह घटना भी जुड़ गई है।

श्रीकृष्ण ने लोक कंटक नरकासुर का बध लोक कल्याण के लिए किया। दीपावली के एक दिन पहले नरक चतुर्दशी मनायी जाती है। यह परम्परा सदियों से चली आ रही है।

श्री महाविष्णु ने हिरण्याक्ष का बध करने के लिए बराहवतार लिया। बराहमूर्ति के द्वारा ही भूमाता ने नरकासुर को जन्म दिया। इस प्रकार नरकासुर विष्णु और भूदेवी का पुत्र हुआ। दैवज्ञों ने भविष्यबाणी की कि वह या तो महान चक्रवर्ती बनेगा या भयंकर राक्षस। भूमाता की तीव्र आकांक्षा थी कि उसका पुत्र धर्मात्मा बने। दुष्ट प्रभाव की परछाइयाँ भी उसपर न पड़ें, इसके लिए उसने आवश्यक जागरूकता बरती। फिर भी असुरों के गुरु शुक्राचार्य एक दिन उसके पास आये और बोले "नरकासुर! असुरों की रक्षा करने के लिए ही तुम्हारा जन्म हुआ है। अपनी जिम्मेवारियाँ जानो और अपना कर्तव्य निभाओ।"

यहीं से नरकासुर के जीवन-मार्ग में मोड़ आया। उसने कठोर तपस्या की और ब्रह्मा से अपूर्व बर पाये। भूदेवी की प्रार्थना पर महाविष्णु ने उसे नारायणास्त्र प्रदान किया।

अपूर्व बरों की प्राप्ति से उसमें अहंकार बढ़ता गया। वह सज्जनों, साधुओं और देव-देवताओं को सताने लगा। मुनियों द्वारा किये जानेवाले पवित्र यज्ञों को वह ध्वंस करता रहा। यहाँ तक कि उसने इंद्रलोक पर भी आक्रमण किया। युद्ध में उसने इंद्र को पराजित किया। इंद्र की माँ अदिति के कर्णकुंडलों का भी अपहरण किया। वरुण के छत्र को अपने वश में कर लिया। इंद्र के सिंहासन पर आसीन होकर उसने आदेश दिया कि ये

सबके सब मार दिये जाएँ ।'' उसका विकट अट्टहास इंद्र सभा में प्रतिध्वनित हुआ ।

इसके उपरांत वह अपनी राजधानी प्राग्ज्योतिष पहुँचा । राक्षस शासन का श्रीगणेश किया । हज़ारों स्त्रीयों को उसने कारागार में ठूँस दिया ।

मुनि और देवता द्वारका गये और श्रीकृष्ण से विनती की कि ''भयंकर राक्षस नरकासुर हमें बहुत ही सता रहा है । उसने हमारा जीना दूभर कर दिया है। आप ही उससे हमारी रक्षा कर सकते हैं।''

श्रीकृष्ण सत्यभामा समेत गरुड़वाहन पर आसीन होकर प्राग्ज्योतिष पहुँचे । भीमकाय व दृढ पहरेदारों का वध किया और दुर्भेद्य दुर्ग को तोड़कर अंदर प्रवेश किया । श्रीकृष्ण और नरकासुर के बीच भीषण युद्ध हुआ । नरकासुर के फेंके आयुधों के लग जाने के कारण श्रीकृष्ण मूर्छित हो गये । उसी क्षण सत्यभामा ने धनुष-बाण अपने हाथ में लिये और राक्षस पर बाणों की बौछार कर दी । विपत्ति में पति का साथ देकर उसने अर्धांगिनी का नाम सार्थक किया । सत्यभामा के बाणों ने नरकासुर को निर्वीर्य कर दिया । इतने में श्रीकृष्ण होश में आये और नरकासुर से युद्ध करने लगे । सुदर्शन चक्र का प्रयोग करके उन्होंने नरकासुर का सर धड़ से अलग कर दिया ।

नरकासुर ने जिन स्त्रीयों को क़ैद किया था, श्रीकृष्ण ने उन्हें छुड़ाया । इंद्रलोक से अपहरण किये गये अदिति के कर्णकुंडलों को उसे लौटाया तथा वरुण के छत्र को भी उन्हें सौंप दिया ।

लोककंटक नरकासुर के मारे जाने पर जनता के आनंद की सीमा न रही । आनंदमय होकर उन्होंने त्यौहार मनाया ।

वह कार्तिक माह की चतुर्दशी का दिन था। इसीलिए प्रति वर्ष उस दिन नरक चतुर्दशी का त्योहार मनाया जाता है ।

मनुष्य का अर्थ है अन्यों की भलाई करनेवाला। दूसरों को हानि पहुँचाकर उन्हें दुख दर्द से पीड़ित करनेवाला राक्षस कहलाता है । ऐसे दुष्टों को दंड देकर प्रजा का उद्धार करनेवाला है भगवान। सभी को चाहिये कि वे इस तथ्य को ग्रहण करें और सन्मार्ग पर चलें । ऐसा करें तो हर दिन दीपावली का दिन है । नरकचतुर्दशी हमें इस उदात्त सत्य का बोध कराती है ।

दिया की आत्मकथा

मैं बहुत प्रसन्न और उत्साहित हूँ । वर्ष का वह समय पुन: निकट आ गया है । जी हाँ-दीपों का त्यौहार - दिवाली । अब वह समय आ गया है कि मुझे स्टील की पेटियों से बाहर निकला जाए, जहाँ मैं पूरे वर्ष पड़ा रहा । यही समय है जब मुझे अच्छी तरह साफ करके चमका दिया जाएगा । यही समय है जब मेरे गहरे कटोरे में तेल डालकर उसमें एक बत्ती डुबो दी जाती है । यही वह समय है जब मुझे जलाकर चारो ओर प्रकाश किया जाता है ।

अब तो तुम अवश्य जान गए होगे कि मैं कौन हूँ? हाँ, मैं पीतल का एक दिया हूँ । मैं दस वर्ष पूर्व वाराणसी के एक कारीगर द्वारा बनाया गया । यह शहर वास्तव में पीतल की कारीगरी के लिए काफी प्रसिद्ध है । मैं बहुत छोटा-सा एक मामूली दिया ही हूँ , परन्तु तुम मेरे चारों ओर एक सुन्दर विचार और खुशी पाओगे । तभी की बात है, जब मुझे पहले-पहल एक दुकान में बिक्री के लिए रखा गया । सौभाग्य मेरा कि मुझे पहले ग्राहक ने ही खरीद लिया । यह ग्राहक थीं शकुन्तला मामी । शकुन्तला मामी ने मुझे अपनी पड़ोसी उर्मिला के विवाह में उपाहार स्वरूप दे दिया ।

इस प्रकार दस वर्ष पूर्व मैंने शर्मा परिवार में प्रवेश किया और तब से यहीं हूँ । मुझे अभी भी उनके साथ मनायी गयी पहली दिवाली याद है । मुझे-याद है कि उस दिन उर्मिला नई दुल्हन के रूप में कितनी सुन्दर लग रही थी । उसकी सिल्क की साड़ी का पल्लू उसके सिर पर बहुत अच्छा लग रहा था । उसका चेहरा मेरे प्रकाश में और चमक रहा था । मुझे घर की चौखट पर रखा गया । मेरे चारों ओर सभी मिट्टी के दिये जल रहे थे । गृहदेवता के कक्ष में एक बड़ा चाँदी का दिया रखा गया था ।

शर्मा परिवार धनी और प्रतिष्ठित परिवारों में माना जाता है। उन लोगों को तरह तरह के दिए रखने का काफी शौक है। सभी छुट्टियों में वे लोग देश के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते हैं और जहाँ भी वे जाते, वहाँ की परम्परा अनुसार बने दिये खरीदते हैं । आपको जानकर हैरानी होगी कि उनके घर में कितने प्रकार के दिये रखे हुए हैं । बंगाल का 'टरकोटा' दिया; तमिलनाडु का प्रसिद्ध मोर के सिर वाला लम्बा 'कुत्तुविल्लकु' (दिया), 'कामाक्षी विल्लकु' जिसका आकार देवी कामाक्षी का है । कर्नाटक की काली मिट्टी का दिया, छोटे-छोटे-चाँदी के महाराष्ट्री दीप तथा भारीकरकम पीतल के गुरुवायुर दिए, जो केरल में काफी प्रसिद्ध हैं, उनके घर में सजाए गए हैं। इसके अतिरिक्त बहुत सारे पूजा-तथा आरती के दिए हैं जिन्हे गिना नहीं जा सकता ।

पूरे भारत में पूजा के लिए दिया का बहुत ही महत्त्व है। उसकी भूमिका मुख्य है । प्राचीन काल में दिया मात्र पूजा के लिए ही नहीं बल्कि जब लोग

युद्ध के लिए जाते थे और जब युद्ध जीतकर आते थे तो उनका स्वागत करने के लिए भी प्रयोग किया जाता था । इसके अतिरिक्त नवजात शिशु का भी इस संसार में दिये के साथ स्वागत किया जाता था।

अरे, क्या तुम यह जानते हो कि दीपों का बड़ा ही सुन्दर नृत्य भी होता है? पंजाब में विवाह के समय पर 'जागो' दिया नृत्य काफी प्रचलित है। वैसे ही गुजरात का 'गर्भा' दीप नृत्य काफी सुन्दर और आकर्षक नृत्य माना जाता है ।

उर्मिला की सबसे पुरानी सहेली शकुन्तला मामी चावल के आटे से बनी दीपों में तेल डालकर तमिल के 'थाई' मास के सभी शुक्रवार को जलाती थीं ।

यह तमिलनाडु राज्य की एक परम्परा है ।

शर्मा परिवार में सभी लोग मुझे पसंद करते हैं, परन्तु एक पालतू स्लशेशियन कुत्ता 'जिम्मी' मुझे नहीं चाहता । वह दिवाली से घृणा करता है और अपने चारों तरफ दिये देखकर परेशान होता है । इस लिए लोग भी उससे घृणा करते हैं । क्योंकि जब भी हम मिट्टी के दिये रखते तो वह आकर उन्हें फोड़ देता ।

आज दिवाली का पहला दिन है । उर्मिला की दोनों बेटियाँ नेहा और नीता बहुत उत्सक हैं और उनसे ज्यादा जिम्मी । वह घर भर में दौड़ रहा है और दो जुड़वा बेटियों की माँ उर्मिला घर में बहुत सारे दीप जला रही है । पहले की तरह ही मैं बहुत उत्सुक हूँ । जब जोत जलती है तो मुझमें तेजस्वी कांति और उत्सुकता की लहर दौड़ जाती है ।

वह मुझे अपनी चमकती हुई दीपों से भरी थाली में रखकर ले जाती है । जिम्मी उसकी कुहनी तक कूद रहा है । जिससे मेरी ज्योति हिलने लगती है । मिट्टी के सारे दीप बरामदे की दिवाल तथा हाते की दिवाल पर पंक्ति में रखे गए हैं । चौखट के पास बनी रंगोली के चारों ओर भी बहुत सारे छोटे-छोटे दीप जगमगा रहे हैं ।

अब मैं ही उसकी थाली में अकेला बचा हूँ । जैसे ही वह मुझे थाली से बाहर निकालती है, जिम्मी उसका हाथ अपने जबड़े में पकड़ लेता है। अरे नहीं ! मैं उसके हाथ पर गिर गया । मेरी जलती हुई बत्ती उर्मिला के शरीर पर गिर पड़ी। मैं अचम्भित हूँ । क्या मैं इस जलने की दुर्घटना के लिए जिम्मेवार हूँ? मैं जमीन पर गिर गया और तेल फैल गया । मैं बहुत दु:खी हूँ कि उर्मिला का क्या हुआ होगा? इतने में जिम्मी पुन:एक बार कूदा और जलती हुई बती उसके पाँव पर गिर पड़ी । अब वह दर्द से छटपटा रहा है । इस समय तक उर्मिला सम्भल गई और उसने जिम्मी के पैर से बत्ती हटा दी । कुछ थोड़ी-सी जलन के सिवा जिम्मी बच गया । मैंने राहत की सांस ली ।

इस दिवाली पर जिम्मी ने आखिर मेरा मन जीत लिया। वह बेवकूफ है परन्तु हमेशा बेवकूफी नहीं करता । उर्मिला और उसकी दोनों बेटियों नीता और नेहा ने घर में चार दिनों तक दीपक जलाया। जिम्मि भी हमेशा की तरह उछल कूद नहीं कर रहा । अब हम सचमुच खुशहाल परिवार है ।

लक्ष्मी और धोबिन

उस राज्य का राजा अपनी रानी से अगाध प्रेम करता था। रानी बहुत ही सुन्दर और हँसमुख थी। उसके सौन्दर्य का बयान करना असम्भव है। राजा और उसकी खूबसूरत रानी दोनों बड़ी प्रसन्नता से अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। एक दिन राजा एक व्यापारी द्वारा लाए गए रत्नों को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। ये रत्न इतने आकर्षक थे कि कोई भी उन पर मुग्ध हो जाता। रत्न राजा को बहुत अच्छे लगे और उसने अपनी रानी के लिए रत्न जड़ित हार बनवाने का निर्णय किया।

इस कार्य के लिए उसने राज्य के सभी प्रमुख और प्रतिभाशाली सुनारों को बुलवा भेजा। राजा ने सुनारों से सबसे अच्छा नमूना मंगवाया और चुने हुए नमूने के लिए अच्छी रकम देने का वादा भी किया। राजा, रानी के जन्म दिन पर रत्नों का हार उपहार में देना चाहता था। सारे सुनार अपने-अपने बेहतरीन नमूनों के साथ दरबार में पेश हुए।

काफी सोच-विचार के बाद एक नमूना निश्चित किया गया। इस प्रकार रत्नों का चमकता हुआ एक खूबसूरत हार तैयार हुआ। राजा तब और भी प्रसन्न हुआ जब उसने यह जाना कि रानी को वह हार इतना पसंद है कि वे उसे हमेशा पहने रहती हैं।

महल के निकट ही एक स्वच्छ नदी सदा बहती थी। जिसमें रानी प्रतिदिन स्नान करने जाती थी। प्रतिदिन की भाँति रानी और उसकी दासियाँ अपने वस्त्र और आभूषण किनारे पर रखकर स्नान करने लगीं। तभी वस्त्रों के बीच चमक रहे उस हार पर एक चील की नजर पड़ी और वह हार को अपने

पंजे में दबारकर उड़ गयी । इससे पहले की कोई कुछ कर पाता चील हार को लेकर काफी दूर निकल गयी ।

इतने कीमती और खूबसूरत हार के लिए राज्य में हाहाकार मच गया । रानी के दुःख का ठिकाना न था । लोग रानी को कोई सांत्वना नहीं दे पा रहे थे । राजा ने हार पाने वाले को उसकी इच्छा अनुसार इनाम देने की घोषणा कर दी । सारे बाजारों में हार के खोने और खोज-निकालने वालों के इनाम के लिए इश्तहार लगाए गए । लोग नुक्कणों पर एकत्र हो हार के बारे में चर्चा करने लगे । उन लोगों को आश्चर्य हो रहा था कि वह हार कहाँ हो सकता है?'' परन्तु एक बूढ़ी धोबिन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, जो महल से काफी दूर, एक टूटी-फूटी अंधेरी झोपड़ी में रहती थी । उसके पास खाने के लिए भी पूरा नहीं पड़ता था, परन्तु वह अपनी झोपड़ी को सदा स्वच्छ रखती थी । उस दिन जब चील हार को लेकर झोपड़ी के पास से उड़ रही थी तो धोबिन ने एक छिपकली को मारकर अपनी झोपड़ी पर फेंक दिया। चील ने अपने भोजन के लिए छिपकली को उठा लिया और हार झोपड़ी के ऊपर गिराकर उड़ गयी। बुढ़िया ने जब कुछ गिरने की आवाज सुनी तो वह बाहर आयी और देखा की फूस की छत पर कुछ चमक रहा है । उसने हार को देखते ही समझ लिया कि यह अवश्य राजमहल से लाया गया है । फिर जब वह लकड़ियाँ बेचने बाजार में गयी तो उसे रानी के हार के खोने की बात पता चली । उसने राजा द्वारा घोषित इनाम के बारे में भी सुना ।

वह घर आयी और उसने हार को सावधानी से एक कपड़े में लपेटकर अपनी कमर में बाँध लिया । उसके बाद वह महल में पहुँची और राजा से मिलने की इच्छा बतायी । राजा की आज्ञानुसार उसे दरबार में पेश किया गया ।

''मैंने सुना है कि तुम्हारी रानी का एक बहुमूल्य हार खो गया है ।'' धोबिन ने राजा से पूछा ।

''हाँ''! राजा ने उत्तर दिया।

''क्या तुम इनाम देने के लिए अपनी घोषणा पर अमल करोगे कि पाने वाला कोई भी वस्तु मांग सकता है?'' बूढ़ी औरत ने पूछा ।

'हाँ'! राजा ने थोड़ी उत्सुकता के साथ कहा और प्रतीक्षा करने लगा कि यह बूढ़ी औरत क्या माँगने जा रही है ।

धोबिन ने हार को बाहर निकालकर दिखाते हुए कहा ''यह मेरे पास है'' और राजा को दे दिया। उसने राजा को हार मिलने की पूरी कहानी सुना दी। फिर उसने कहा ''राजा अब मैं जो माँगूगी

तुम्हें देना होगा ।''

राजा ने संदिग्धता से उसके माँगने का इन्तजार किया । क्योंकि उसे यह पता नहीं था कि वह कितना धन माँगने वाली है । दरबार में सभी लोग उपस्थित थे और बूढ़ी औरत की माँग की मौनता से प्रतीक्षा कर रहे थे । उस बूढ़ी औरत को धन-दौलत कुछ नहीं चाहिए था । न ही वह जमीन-जायदाद चाहती थी । क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि उसने राजा से क्या माँगा?

उसने कहा ''आपकी जय हो; दिवाली कुछ दिनों में ही आने वाली है । इस दिपावली में मैं चाहती हूँ कि आपके राज्य में कोई दीपक न जलाए सिवाय मेरे । इस प्रकार राजमहल में भी कोई दीप न जलाया जाए । यही मेरी मांग है ।''

राजा ने तुरन्त इस माँग को स्वीकार कर लिया । क्योंकि वह एक गरीब औरत को अपने धन का कोई हिस्सा नहीं देना चाहता था । हो सकता है वह रानी का कोई दूसरा हार भी दे देता । इस प्रकार राजा ने बुढ़िया के कहे अनुसार आदेश लागू कर दिया । अब दिपावली के दिन पूरे राज्य में सिर्फ बुढ़िया के घर में ही एक दीपक जल रहा था । बाकी चारों तरफ अंधेरा था ।

आधीरात के समय देवी लक्ष्मी ने उस राज्य में प्रवेश किया और चारों तरफ अंधेरा देखा । वह काफी दु:खी हुई । फिर उन्होंने चारों ओर देखा और पाया कि एक घर में दीपक जल रहा है । वह जल्दी-जल्दी वहाँ गयीं और दरवाजा खटखटाया । बूढ़ी औरत अपनी पूजा में व्यस्त थी और कई बार वहीं से पूछा कि ''दरवाजे पर कौन है?'' कृपा करके मुझे भीतर आने दीजिए । बाहर पूरी तरह अंधेरा छाया हुआ है और मुझे भय लग रहा है,'' लक्ष्मी ने कहा । जो कि सिर्फ स्वच्छ और प्रकाशमय स्थान पर जाना पसंद करती हैं ।

''तुम कौन हो?'' बूढ़ी औरत ने पूछा ।

''मैं लक्ष्मी देवी हूँ । मैं स्वर्ग से दिपावली मनाने के लिए आयी । इस वर्ष में दिपावली को खुशी से नहीं मना पा रही हूँ । चारों तरफ काफी अंधेरा है ।'' देवी ने शिकायत भरे स्वर में कहा ।

''आज तक तुम कभी भी दिपावली के समय मेरे घर नहीं आयीं । अब मैं तुम्हें क्यों भीतर आने दूँ?'' बूढ़ी औरत ने कहा । ''मैं नहीं सोचती कि मैं तुम्हें भीतर आने दूँगी ।''

परन्तु लक्ष्मी ने उससे प्रार्थना की और बूढ़ी औरत तैयार हो गयी । लेकिन उसने कहा ''मैं एक शर्त पर ही तुम्हें भीतर आने दूँगी । तुम वादा करो कि कभी भी मेरा घर छोड़कर नहीं जाओगी !''

लक्ष्मी ने वादा किया और अपनी तेजस्वी ज्योति के साथ उसकी झोपड़ी में प्रवेश कर गयीं । उसके बाद बूढ़ी धोबिन को कभी कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि लक्ष्मी ने उसे नहीं छोड़ा ।

दिवाली का सपना

प्रातःकाल के सूर्य ने पूरे आकाश को सुनहरा कर रखा था । अम्बा गाँव के सारे बच्चे राजपुर जाने की तैयारी कर रहे थे ।

राजपुर में राजशेखर का एक कारखाना था, जहाँ पटाखे बनाए जाते थे। राजशेखर लंदन में रहता था और वहाँ अपने अन्य व्यापार संभाल रहा था । चंद्रमोहन नामक एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति इस कारखाने का मैनेजर था। कारखानों में वयस्कों को नियुक्त करने पर अधिक वेतन देना पड़ेगा और उनकी माँगें भी अधिक होती हैं, इसलिए वह बच्चों से यह काम करवाता था । चन्द्रमोहन उन्हें बहुत ही कम पारिश्रमिक देता । हमेशा इसी सोच में रहता था कि उनका पारिश्रमिक कैसे और कितना कम किया जाए । अपनी जेब भरने के लिए वह तरह-तरह के उपाय अमल में लाता था । सब बच्चे उससे डरते भी थे । दिवाली निकट होने के कारण कारखाने में काफी काम था । इसलिए मैनेजर और अधिक बच्चों को काम पर लगा रहा था ।

अंबा गाँव के मोहन, कृष्ण, सीता, जॉनसन, अफजल के अतिरिक्त और सात बच्चे कारखाने में काम करते थे । सबेरे से लेकर शाम तक उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी । वे सबके सब दस साल से लेकर पंद्रह सालों तक की उम्र के थे । उनकी कमाई पर ही उनके माता-पिता निर्भर थे । उन्हें काम पर भेजने पर ही वे दो वक्त का खाना जुटा पाते। चूँकि राजपुर अंबा से काफी दूर था, इसलिए सबेरे-सबेरे ही उन्हें निकल जाना पड़ता था ।

अफजल सोचता हुआ चला आ रहा था । उसकी माँ काफी बिमार है और चार साल की उसकी छोटी बहन पटाखों के लिए जिद कर रही थी । दीवाली के अवसर पर पटाखे जलाने की उसकी बड़ी तमन्ना थी। अफजल का पिता एक दुर्घटना में मर गया था । इसलिए वह अपनी बहन की इच्छा पूरी करना अपना फर्ज़ मानता था । पैसों के अभाव में वह ईद का

त्यौहार भी अच्छी तरह मना नहीं पाया । इसी बात को लेकर वह सोचता हुआ आगे बढ़ रहा था ।

मोहन और कृष्णा ऊँचे स्वर में गाना गाते हुए चले जा रहे थे। रास्ते में मिले अमरूद को लेकर सीता खाने लगी । जॉनसन चिडियों की आवाज़ों की नक़ल उतारता हुआ चला जा रहा था ।

वे यों ही समय पर कारखाना पहुँचे । उन्हीं की तरह आसपास के गाँवों के पचास-साठ अन्य बच्चे भी उस कारखाने में काम कर रहे थे ।

रसायन पदार्थों के मिश्रण के समय हाथों से काम लेना पड़ता था, इसलिए अफजल की उंगलियों का चमड़ा उखड़ गया था लगता था, मानों उंगलियाँ जल गयीं हों। शुरू-शुरू में हाथों पर पहनने के लिए रबड़ के दस्ताने दिये गये थे । पर कुछ ही दिनों में वे फट गये । फिर भी मैनेजर ने उन्हें नये दस्ताने खरीदकर नहीं दिये । हाथों में दर्द होता था। दर्द से पीड़ित अफजल ने काम रोक दिया और बग़ल में खड़ा हो गया । तभी टेलिफोन की घंटी बजी। मैनेजर चंद्रमोहन ने फोन उठाया और पूछा "कौन बोल रहा है?" उस तरफ़ से आवाज़ सुनकर वह सहम गया । फिर झूठी हंसी हंसते हुए कहने लगा "नमस्कार, यहाँ सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है । आप बिल्कुल बेफिक्र रहिए। हाल ही में मैंने सबके वेतन में वृद्धि भी की है। सब मज़दूर खुश हैं । अच्छा काम कर रहे हैं । कल परसों हिसाब की किताबें भी आपकी सेवा में भेजूँगा । यहाँ का कारोबार संभालने, आप यहाँ आकर अपना समय व्यर्थ मत कीजिये । कोई समस्या हो तो मैं खुद आपको फोन करूँगा ।"

अफसल दरवाज़े के पास ही खड़े होकर यह बातचीत सुन रहा था । वह समझ गया कि वह दूसरा आदमी जो फोन पर बात कर रहा था, वह कोई और नहीं, कारखाने का मालिक ही है । मैनेजर कहीं उसे न देख ले इसके पहले ही वह वहाँ से चला गया ।

शाम को लौटते समय राह भर में मैनेजर की बातें ही अफजल के कानों में गूंज रही थीं । उन बातों से वह समझ गया कि मालिका अच्छा आदमी है । कारखाने में जो अन्याय हो रहा है, उनसे वह अपरिचित है । मैनेजर ही अपना उल्लू सीधा करने के उद्देश्य से मालिक को गुमराह कर रहा है । वह सोचने लगा कि मालिक को यहाँ की वास्तविक स्थिति का पता कैसे लगेगा ? उसने निर्णय कर लिया कि जो भी हो, जैसे भी हो, मालिक को यहाँ की हालत बतानी चाहिये।

उसने यह रहस्य सीता को बताया । वह ग्यारह साल की उम्र की थी । उससे एक साल बड़ी । दो सालों तक पढ़ने स्कूल भी गयी थी। किन्तु ग़रीबी के कारण लाचार होकर उसे स्कूल छोड़ना पड़ा ।

अफजल की सलाह के मुताबिक सीता ने कारखाने के मालिक को एक खत लिखा, जिसमें उसने विनती की कि वे एक बार कारखाना आयें और खुद यहाँ की दुस्थिति देखें । अफजल ने उस ख़त पर दस्तखत किया ।

दूसरे दिन किसी कारण से सीता देरी से आयी। मैनेजर जब उसे डांटने-डपटने लगा तब अफजल चुपके से मैनेजर के कमरे में गया । उसने पूरे कमरे पर अपनी नज़र दौडायी और निर्णय कर लिया कि आगे क्या करना चाहिये ।

दूसरे दिन सीता भी अपने गाँव के अन्य बच्चों के साथ-साथ ही आयी, लेकिन जान-बूझकर रास्ते में

रुक गयी । जब बाकी बच्चे कारखाना पहुँच गये तब मैनेजर ने सीता के बारे में पूछा कि आज वह क्यों नहीं आयी?

कृष्ण कुछ कहना ही चाहता था कि इतने में अफ़ज़ल ने कहा "जब हम निकले तब सीता सो रही थी ।"

"अच्छा हुआ, कम से कम तुम लोग तो आ गये। बुत की तरह खड़े क्यों हो? जाओ, अपना-अपना काम देखो!" मैनेजर ने डांटते हुए कहा और वहीं खडा रह गया ।

अफ़ज़ल ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाना चाहा। वह पीछे से उसके कमरे में घुसा । मेज पर एक बड़ा रजिस्टर दिखायी पड़ा । उसे लगा कि यही हिसाब की पोथी होगी । उसने जेब से तुरंत ख़त निकाला और चुपचाप उसे पोथी के अंदर रख दिया ।

घर जाने के पहले उसने मैनेजर के कमरे में झाँककर देखा। देखा कि बहुत सारी पुस्तकें एक साथ रखी हुई हैं । वहाँ पुस्तकों का ढेर है । वह सोचने लगा। "मुझसे कहीं ग़लती तो नहीं हो गयी । मैनेजर के हाथ वह ख़त लग जाए तो बस, ज़मीन-आसमान एक कर देगा । उसे नौकरी से निकाल देगा । अगर ऐसा हुआ तो माँ और बहन की देखभाल कैसे कर पाऊंगा ?"

एक दिन सबेरे कारख़ाने के सामने खड़ी एक सुँदर और बड़ी मोटरगाड़ी को देखकर बच्चे अवाक् रह गये । उन बच्चों को देखते ही मैनेजर हडबड़ाता हुआ वहाँ आया और बच्चों कारखाने के पीछे ले गया। कहने लगा "आज तुम सब लोग घर चले जाओ । हमारे मालिक राजशेखर यहाँ आये हुए हैं। सबेरे-सबेरे तुम लोगों के भद्दे चेहरों को देखना वे पसंद नहीं करेंगे। तुरंत तुम लोगों को नौकरी से निकाल देंगे।" फिर उसने कुछ सोचते हुए कहा "एक काम करोगे तो तुम लोग इस मुश्किल से बच सकते हो ! उनसे कहना कि हमारा मैनेजर बहुत अच्छा इन्सान है। हमारी देखभाल अच्छी तरह से करता है। कहोगे न?"

उस समय राजशेखर ने अकस्मात् वहाँ प्रवेश किया और कहा "यहाँ क्या हो रहा है? बच्चों का यहाँ क्या काम? तुममें से अफ़ज़ल कौन है? उससे बात करनी है ।"

बच्चों ने अफ़ज़ल की ओर इशारा किया । "आओ अफ़ज़ल, घबराने की कोई बात नहीं।" उसकी उंगलियों की ओर देखते हुए कहा "अरे, ये उंगलियाँ कैसे जल गयीं? क्यों इनकी ऐसी हालत हो गयी?"

बाकी बच्चों ने भी अपनी-अपनी उंगलियाँ दिखायीं और इसका कारण बताया ।

राजशेखर ने नाराज़ होते हुए मैनेजर से कहा "अपने पूर्वजों की याद में मैंने इस कारखाने का निर्माण किया । मेरी चाह थी कि आसपास के गाँवों के ग़रीब यहाँ काम करें और रोटी कमायें । तुमने मेरा किया-कराया सब मिट्टी में मिला दिया । मुझे बदनाम कर दिया ।"

मैनेजर शरम के मारे सिर झुकाकर खड़ा रह गया। राजशेखर ने बच्चों से कहा : "इसके लिए मैं तुम सबसे माफ़ी मांगता हूँ । मैं अपने को गुनहगार मानता हूँ। जो हुआ, सो हुआ। यहाँ काम पर लगे सब बच्चों को पढ़ाऊँगा । तुम लोगों के लिए एक पाठशाला का प्रबंध करूँगा ।" फिर उसने बच्चों को चाकलेट और बिस्कुट दिये ।

राजशेखर की बातें सुनकर बच्चों सुख की सांस ली और उनके मन में आत्मविश्वास जगा ।

– के.सी. नित्या

चीन की एक कथा

युनहसियों कैसे घर गयी

कई बर्षों पहले चीन में 'वू दी' नामक राजा राज्य करता था । उसके महल में युनहसियों नामक एक दासी रहती थी । वह पूरे वर्ष, महीने के सभी दिनों काम करती थी । उसके लिए कोई भी दिन छुट्टी का दिन नहीं था । जैसा कि तुम सोच सकते हो कि उसे अपने घर जाकर अपने परिवार से भी मिलना चाहिए था । परन्तु महल का कानून बड़ा ही सख्त था कि किसी भी नौकर को महल के बाहर जाने की आज्ञा नहीं थी ।

महल में ही युनहसियों का एक मित्र था । जिसका नाम डाँग फेंग श्यू था । वह एक मंत्री पद पर कार्य करता था । वही एक ऐसा व्यक्ति था जो राजा से बात कर सकता था । युनहसियों, डाँग फैग श्यू से हमेशा मिलती और बातें करती थी । कभी-कभी वह उसे अपने द्वारा बनाए गए 'मूनकेक' भी देती, जो डाँग फैग श्यू को बहुत पसंद था ।

एक दिन युनहसियों ने डाँग को यह बात बताई कि वह अपने परिवार से मिलना चाहती है । डाँग को यह देखकर बहुत दुःख हुआ कि श्यू अपने परिवार के सदस्यों से मिलने के लिए कितना तड़प रही है । फिर उसने सोचा कि वह युनहसियो की मदद करेगा। डाँगफेंग श्यू बहुत ही चालाक किस्म का व्यक्ति था । अपने स्वभाव के अनुसार ही उसने एक योजना बनाई ।

अब वह राजा के पास गया और कहा कि - "महाराज आकाश के देवता ने अग्नि देवता को आज्ञा दी है कि वे इस राज्य को पहले चन्द्र महीने के पन्द्रहवें दिन, पूरी तरह नष्ट कर दें । जब कि नव वर्ष का उत्सव समाप्त हो रहा होगा ।

राजा ने श्यू से इस विपत्ति से बचने का उपाय पूछा कि "अब क्या करना चाहिए?"

"हमें अग्नि देवता से राज्य को बचाने के लिए सभी का सहयोग लेना चाहिए । सभी को अपने परिवार के साथ एकत्र कर, लाल रंग के दीपक

जलाकर पूरी रात पटाखे जलाते रहना चाहिए । इस प्रकार अग्नि देवता प्रसन्न हो जाएँगे और हमें कोई नुकसान नहीं होगा,'' उस चालाक मंत्री ने कहा ।

डाँग फाँग श्यू ने यह भी सलाह दी कि अग्निदेवता को 'मून केक' भी देना चाहिए जो उन्हें बहुत पसंद है । युनहसियो का 'मून केक' बहुत प्रसिद्ध था तो उसे बहुत सारा केक बनाने के लिए कहा गया । राजा ने आदेश दिया कि डाँगफाँग श्यू की सलाह अनुसार सभी लोग उत्सव की तैयारी करें ।

पूरे राज्य की प्रजा ने उस रात को खूब प्रसन्नता से मनाया और केक खाया, दीप जलाए, तथा पटाखे जलाए । इस प्रकार शहर को कोई नुकसान नहीं पहुँचा । बल्कि युनहसियों अपने घर जाकर अपने परिवार वालों से मिल सकी ।

राजा को वह उत्सव बहुत अच्छा लगा और उसने आदेश दिया कि प्रतिवर्ष इसी दिन सभी लोग लालदीप वाली लालटेन टाँगकर तथा पटाखे जलाकर उत्सव मनाएँ । इस प्रकार नव वर्ष के समय यह उत्सव मनाया जाने लगा, जब सभी लोग अपने-अपने घर जाकर अपने परिवार के साथ इसका आनन्द लेते हैं ।

चीनवासी चंद्र नववर्ष मनाते हैं, जिसमें कुछ दिनों को वे बसंत ऋतु भी कहते हैं। नव वर्ष के बीस दिन पहले से ही वे अपने घर की सफाई आरम्भ कर देते हैं और घर का सारा कूड़ा-कचरा निकालते हैं। उसके बाद वे घरों की रंगाई पुताई करके उसे सजाते हैं। घर के सारे बर्तन अच्छी तरह धोये जाते हैं, और घर के सभी लोगों के लिए नए कपड़े भी खरीदे जाते हैं।

नव-वर्ष के एक दिन पहले ही सारी गृहणियाँ अपने घर का झाड़ू-पोचा कर लेती हैं। कहा जाता है कि नए साल के दिन झाड़ू लगाने से सौभाग्य चला जाता है ।

त्यौहार के समय पकवानों का बड़ा महत्व होता है । बहुत सारे अच्छे पकवान बनाए और बाजार से खरीदे जाते हैं । लोग चावल के एक प्रकार के पकवान 'एट ट्रेजर राईस', 'चावल के आठ खजाने' जिसमें आठ प्रकार के माँस मिलाए जाते हैं, बनाते हैं । नए वर्ष की शाम को सभी लोग अपने घर पर ही रहने की कोशिश करते हैं

और इस शाम को भव्य रूप से मनाते हैं। बच्चों को अपने माता-पिता तथा अन्य बड़े लोगों से लाल रंग के लिफाफे में पैसा मिलता है ।

रात के समय सभी लाल रंग की लालटेन जलाई जाती हैं और घर के सभी सदस्य पटाखे फोड़ते हैं। जिसके लिए मान्यता है कि पटाखे की आवाज सुनकर सारे भूत-प्रेत और बुरी आत्माएँ भाग जायेंगी । दूसरे दिन लोग अपने मित्रों और सम्बन्धियों के घर जाकर नव वर्ष की शुभकामना देते हैं । इस समय चीन में भारत की भाँति लोग अपने नए लेखा-जोखा आरम्भ करते हैं।

नए साल के पन्द्रहवें दिन लालटेन उत्सव मनाया जाता है । चीनवासियों का बिश्वास है कि इस रात को नए बर्ष के पूर्ण चाँद का दिव्य रूप आकाश में उड़ता हुआ देखा जा सकता है । इसलिए वे लालटेन के द्वारा चाँद को देखते हैं । चावल के ओट से एक 'मून केक' बनाया जाता है, जो चाँद की तरह गोल होता है । जिसे युनहसियो कहते हैं । माना जाता है कि केक खाने से पूरा चाँद खा लिया गया । मंदिरों में भी बहुत सारे लालटेन जलाए जाते है। इस दिन को 'ड्रैगन हॉल' के नाम से भी मनाया जाता है । एक १०० फीट का रंग-बिरंगा चमकीली आँखों वाला तथा झूमते हुए शरीर वाला ड्रैगन बनाकर शहर की सभी गलियों से जुलूस निकाला जाता है । उसके पीछे-पीछे झांझ, तबले तथा पीतल के अन्य बाजे बजाते हुए लोग जाते हैं। यह नए वर्ष के उत्सव को और आनन्दमय बना देता है ।

भूल-भुलैया

क्या आप इस शरारती नन्हें बच्चे को दूसरे कोने में पड़े पटाखे के पास पहुँचाने में मदद करेंगे। परन्तु याद रहे आपको इस भूल भुलैया के बीच में हुए विस्फोट से बचना है !
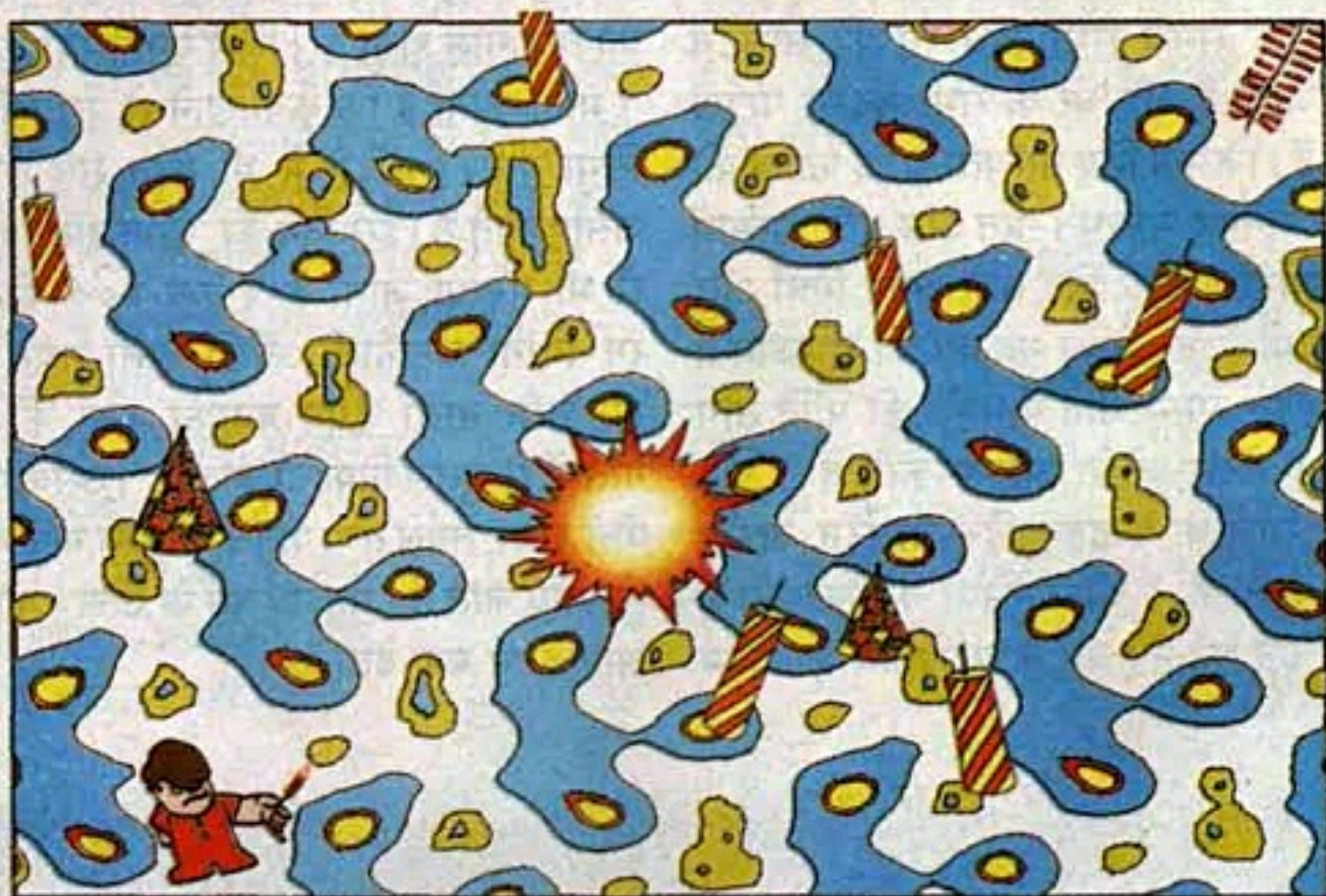
क्या तुम जानते थे:

- विक्रम संवत पंचांग दिवाली के दिन ही आरम्भ हुआ। यह पंचांग ५८ ई.पूर्व आरम्भ किया गया। कुछ ऐतिहासिक तथ्यों द्वारा प्रमाणित किया गया है कि महान भारतीय सम्राट विक्रम के नाम पर इसका नाम विक्रम संवत पड़ा। सम्राट विक्रम मध्य और उत्तरी भारत में राज्य करते थे। उत्तरी भारत में जहाँ भी विक्रम युग का अनुसरण किया जाता है वहाँ दिवाली को नए साल के रूप में मनाया जाता है।
- जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर के बारे में विश्वास है कि उन्होंने दिवाली के दिन ही अपना शरीर त्यागा था। जैन लोग इसे देव दिवाली कहते हैं। वे लोग इस दिन अपने घर में दिए जलाते हैं और मिठाइयाँ बाँटते हैं। इसके अतिरिक्त रात भर भजन-कीर्तन करते हैं। महावीर की पूजा मध्यरात्री में तथा अगले दिन सुबह की जाती है।
- पश्चिमी बंगाल में दिवाली संयोगवश क्षेत्रीय त्यौहार काली और श्यामा पूजा के नाम से मनायी जाती है। इस समय दुर्गा के रुद्र रूप की पूजा की जाती है।

दिवाली दमक

यहाँ दो या तीन लोगों के खलने के लिए एक खेल बनाया गया है । आरम्भ करने के लिए तुम्हारी गोटी पर ६ आना चाहिए। अपने प्रतियोगी को भी इसी प्रकार खेलने दो । और दी गई सावधानियों का पालन करते हुए खेलो ।
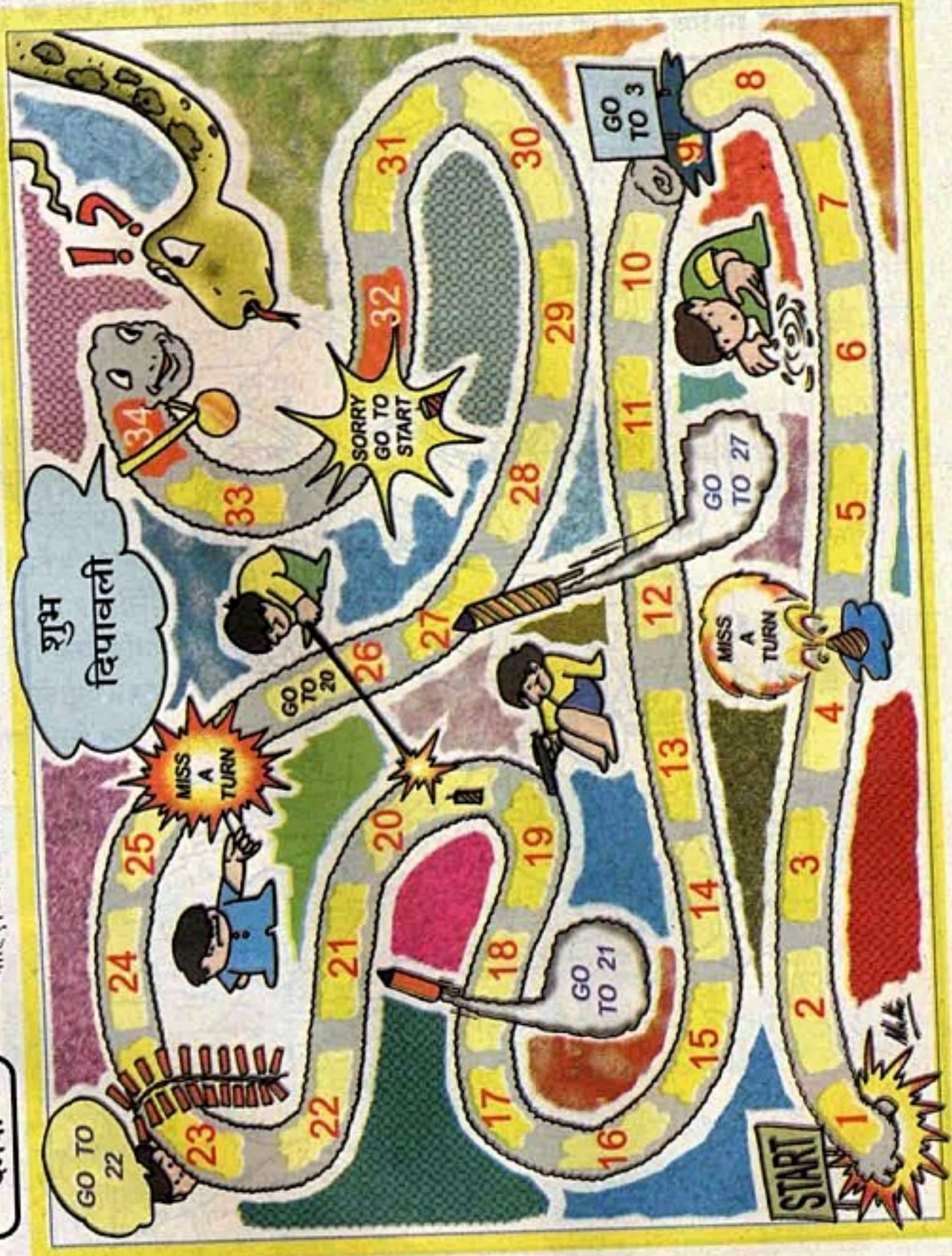
रंग भरो

मृत्यु के देवता यम से नन्हें नचिकेता ने बहुत ही सारगर्भित प्रश्न पूछे । यह माना जाता है कि इस प्रकार का बुद्धिमता पूर्ण वार्तालाप यम और नचिकेता के बीच दिवाली के समय ही हुआ । क्या तुम उस दृश्य को पुनः याद करने के लिए इस चित्र में रंग नहीं भरना चाहोगे? रंग भरो और देखो ।

महाभारत

युद्ध अपनी चरम सीम पर था। अर्जुन को अभी तक पता न था कि उसका पुत्र ऐरावंत वीरगति को प्राप्त हो गया है । वह कौरव दल के वीरों का वध करने में निमग्न था । दूसरी ओर भीष्म पितामह पांडव सेना को थर्रा रहे थे। भीम, धृष्टद्युम्न तथा सात्यकी अपने अनुपम पराक्रम का परिचय दे रहे थे । द्रोण की निपुणता को देखते ही बनता था ।

ऐरावंत की मृत्यु को देख भीम का पुत्र घटोत्कच क्रोध में आया । भयंकर नाद करके अपने हाथ में चमकनेवाला एक शूल लेकर राक्षस गणों को साथ ले युद्ध भूमि की ओर बढ़ा । उसके विकराल रूप को देख कौरव सेनाएँ घबरा उठीं । इसे देख दुर्योधन भीषण युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गया । घटोत्कच के सामने आकर सिंहनाद कर उठा । दुर्योधन के पीछे वंगदेश का राजा दस हज़ार हाथियों के साथ आ पहुँचा। उस गजसेना को देखते ही घटोत्कच क्रोध में पागल हो गया । उसके राक्षस योद्धा गजसेना पर आक्रमण करके ध्वंस करने लगे । गज योद्धाओं को चकित हो खड़े देख, दुर्योधन कुपित हो बाणों के साथ राक्षसों का बध करने लगा । तब घटोत्कच ने स्वयं दुर्योधन पर आक्रमण कर दिया।
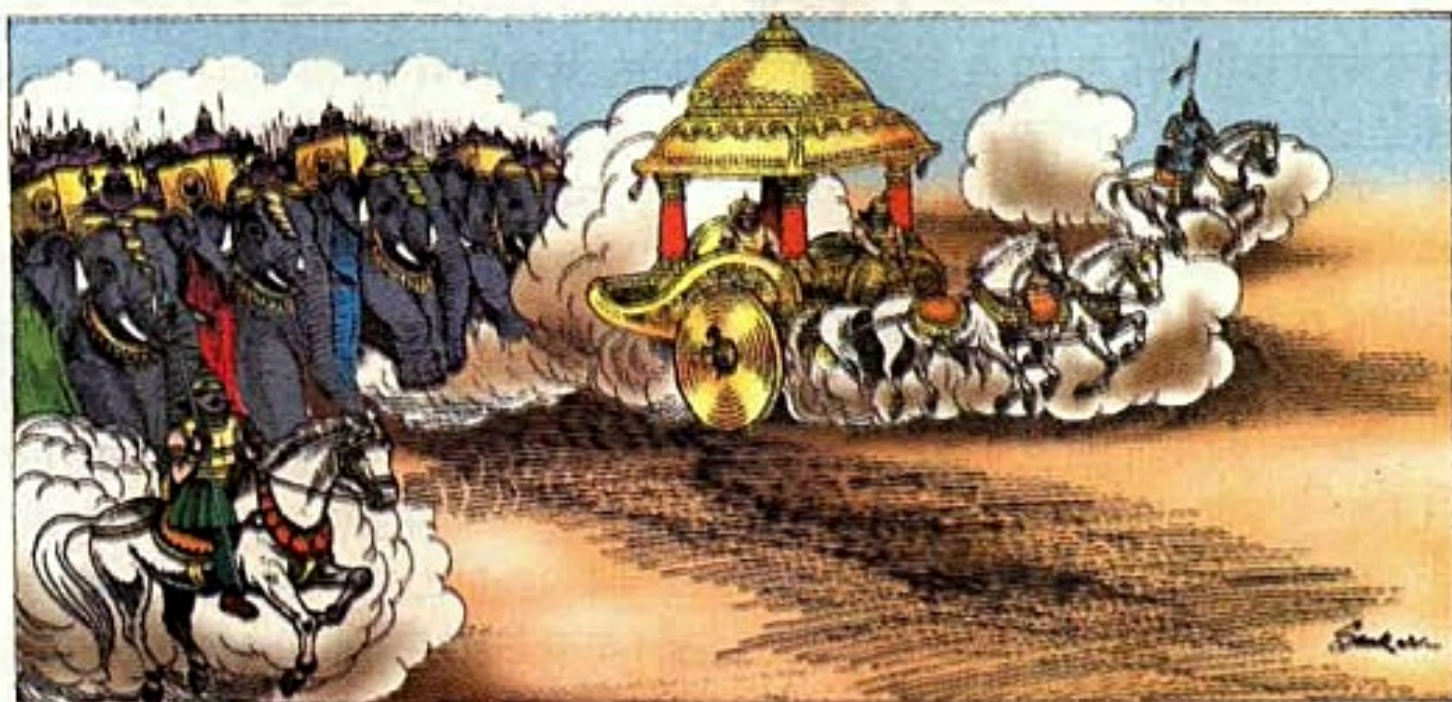
उस युद्ध में घायल होकर खून से लतपथ घटोत्कच ने दुर्योधन का वध करने के लिए एक भारी शक्ति को हाथ में लिया । उस समय बंगदेश के राजा ने अपने भारी हाथी को दुर्योधन के रथ के आगे खड़ा कर दिया । घटोत्कच के द्वारा फेंकी गयी शक्ति के वार से वह मत्त हाथी नीचे गिरा । बंगदेश का राजा हाथी पर से नीचे कूद पड़ा और कहीं सेना के बीच भाग गया । मौक़ा पाकर घटोत्कच अट्टहास कर उठा और भयंकर गर्जन करते हुए दुर्योधन को सताने लगा ।

घटोत्कच का गर्जन सुनकर भीष्म ने द्रोणाचार्य से कहा - ''घटोत्कच दुर्योधन को सता रहा है । उसका वध करना किसी के लिए संभव नहीं है । तुम सब जाकर दुर्योधन की रक्षा करो ।''

यह बात सुनते ही द्रोण, सोमदत्त, बाह्लिक, सैंधव, कृपाचार्य, भूरिश्रव, शल्य, बृहद्बल, अश्वत्थामा, विकर्ण, चित्रसेन, विविंशती इत्यादि महारथियों ने अनेक रथों को साथ ले घटना स्थल पर प्रवेश किया । उन्होंने देखा कि घटोत्कच दुर्योधन पर वार करते हुए उसे भगा रहा है । उन वीरों ने घटोत्कच को रोककर उसके साथ युद्ध किया । उस युद्ध में घटोत्कच ने अनेक शत्रु वीरों को घायल कर दिया । पांडव वीरों ने घटोत्कच की सहायता की । कौरव योद्धाओं में से कुछ लोगों के कवचों में छेद हो गये, कुछ योद्धा घायल हुए और कुछ योद्धाओं के सारथी मर गये । तब वे सब युद्धक्षेत्र से हट गये ।

घटोत्कच इतने से ही चुप न रहा । उसने फिर से दुर्योधन पर आक्रमण किया । इसे देख कौरव वीर भी घटोत्कच से जूझ पड़े । फिर भी घटोत्कच विचलित न हुआ, उसने सबके साथ युद्ध किया ।

युधिष्ठिर को जब यह समाचार मालूम हुआ, तब उन्होंने भीम से कहा - ''तुम्हारा पुत्र घटोत्कच शक्ति से बढ़कर दारुण युद्ध कर रहा है । भीष्म पांचालों का निर्मूल करने के प्रयत्न में हैं, इसलिए अर्जुन उनके साथ युद्ध कर रहा है ।'' इस पर भीम ने सोचा कि अर्जुन की सहायता करने की अपेक्षा घटोत्कच की मदद करना ज्यादा आवश्यक है । वह अति वेग के साथ घटोत्कच के निकट पहुँचा । उसके साथ अभिमन्यु, उप पांडव, नील, सत्यधृती, सौचित्री, श्रेणीमंत, वसुतास, इत्यादि भी चल पड़े । उभय दल के वीरों के बीच घमासान लड़ाई

हुई । उस लड़ाई में पांडवों का हाथ ही ऊँचा रहा ।

इस पर दुर्योधन रुष्ट हुआ और उसने भीम पर धावा बोल दिया । उस युद्ध में भीम चोट खाकर रथ से नीचे गिर पड़ा । इतने में घटोत्कच, अभिमन्यु इत्यादि पांडव बीरों ने दुर्योधन को घेर लिया । दुर्योधन को ख़तरे में फँसे देख द्रोण उसकी मदद के लिए कुछ कौरव बीरों को साथ ले आए। इस बार के युद्ध में घटोत्कच ने राक्षसी मायाओं का प्रयोग करके शत्रु को चकित कर दिया । घटोत्कच के प्रहारों से घबराकर कौरव सेनाएँ तितर-बितर हो गयीं और शिविरों की ओर भाग गयीं ।

उस वक़्त दुर्योधन ने भीष्म के पास जाकर कहा - "दादाजी, जैसे पांडवों ने कृष्ण पर विश्वास किया, वैसे हमने भी आप पर भरोसा करके युद्ध प्रारंभ किया है । घटोत्कच एवं भीम ने मिलकर मेरी घोर पराजय की । यह अपमान मुझे जला रहा है । किसी भी उपाय से ही सही, इस राक्षस का अंत करना होगा । आप हम पर यह उपकार कीजिए ।"

इस पर भीष्म ने दुर्योधन से कहा - "पुत्र, तुम युधिष्ठिर या भीम अथवा नकुल और सहदेवों के साथ युद्ध करो । एक राजा का दूसरे राजा के साथ युद्ध करना राजधर्म है । राक्षस घटोत्कच के साथ युद्ध करने के लिए हम सब तैयार हैं। उसके साथ युद्ध करने के लिए तुम भगदत्त को भेज दो । वह इंद्र के समान है ।" फिर भीष्म ने भगदत्त से कहा - "तुमने अनेक राक्षसों के साथ युद्ध किया है। घटोत्कच का सामना करने

के लिए तुम ही एक योग्य व्यक्ति हो । तुम अभी जाकर हमारे देखते ही देखते उसका वध कर डालो ।"

भीष्म के मुँह से यह बात सुनते ही भगदत्त सुप्रतीक नामक अपने भारी हाथी पर सवार हो पांडव योद्धाओं के साथ युद्ध करने निकल पड़ा। उस वक्त महा दारुण युद्ध हुआ । भगदत्त भीम से जूझ पड़ा । सुप्रतीक को अत्यंत वेग के साथ भीम के रथ की ओर बढ़ते देख केकय, उप पांडव, अभिमन्यु, दशर्ण राजा क्षत्रदेव, चेदि राजा चित्रकेतु वगैरह ने उसके हाथी पर बाणों की वर्षा की । मगर सुप्रतीक पांडव सेना का सर्वनाश करने लगा । इसे देख घटोत्कच भगदत्त पर हमला कर बैठा । भगदत्त ने क्रमशः सबको बुरी तरह से मारा । भीम का सारथी रथ पर ही

बेहोश हो गया । इतने में अर्जुन, भीम और घटोत्कच के निकट आया । उसने भी घोर युद्ध किया । भगदत्त अपने हाथी के द्वारा पांडव सेना को कुचलते हुए आगे बढ़ा और उसने युधिष्ठिर के साथ संग्राम किया ।

उस वक़्त ऐरावंत की मौत की बात भीम और अर्जुन को मालूम हो गयी । अर्जुन बड़ा दुखी हुआ! उसने कृष्ण से निवेदन किया कि उसके रथ को कौरव सेना के बीच ले जायें! पुनः दोनों दलों के बीच समर प्रारंभ हुआ । उस संग्राम में भीम ने व्यूढोंरुक, कुंडली, अनाधृष्टी, कुंडभेदी, वैराट, दीर्घनेत्र, दीर्घबाहु, सुबाहु, कनकध्वज नामक व्यक्तियों तथा धृतराष्ट्र के पुत्रों को भी क्रमशः मार डाला । जब भीम उनका वध कर रहा था, तब द्रोण ने उस पर बाणों की वर्षा की; फिर भी उसे रोक नहीं पाया । इतने में गहरा अंधकार फैलने लगा । तब उभय पक्षों के योद्धा युद्ध रोककर शिबिरों में चले गये ।

इसके उपरांत दुर्योधन, शकुनी और दुश्शासन ने कर्ण के साथ मंत्रणा की । उस संदर्भ में दुर्योधन ने कर्ण से बताया - "न मालूम क्यों, भीष्म, द्रोण और शल्य, पांडवों को पीड़ित नहीं कर पा रहे हैं । पांडव पराजय न पाकर हमारी सेना का संहार करते जा रहे हैं । दिन-प्रतिदिन हमारी सेना का क्षय होता जा रहा है । भगवान और पांडव भी मेरा पराभव करते जा रहे हैं । मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं पांडवों को कैसे पराजित कर सकता हूँ?"

इस पर कर्ण ने समझाया - "भीष्म को युद्ध से विश्राम लेने दीजिए, तब आकर मैं सोमकों के साथ पांडवों का भी वध कर डालूँगा । मैं भीष्म को अपने पराक्रम का परिचय दूँगा । भीष्म पांडवों के प्रति स्नेह रखते हैं, इसलिए वे कभी उनका बध नहीं करेंगे और न कर सकेंगे । इसलिए आप भीष्म के शिविर में जाकर उन्हें समझाइये कि वे अस्त्र-सन्यास करे । समझिये कि भीष्म के अस्त्र-सन्यास करने के उपरांत दूसरे ही क्षण पांडव मर गये ।"

इसके बाद दुर्योधन अपने भाइयों तथा अन्य लोगों को साथ ले भीष्म के शिविर में पहुँचा और बोला - "दादाजी, मैं कह नहीं सकता हूँ कि आप मुझ पर नाराज़ हैं या मेरा दुर्भाग्य है कि आप पांडवों की रक्षा करते जा रहे हैं । यदि आपका उद्देश्य उनकी रक्षा करना है तो आप युद्ध करना त्यागकर युद्ध का भार कर्ण को सौंप दीजिए ।

वह और उसके रिश्तेदार सब पांडवों को हरायेंगे।''

ये बातें भीष्म के मन में शूल की भांति चुभ गयीं। उन्हें देखकर ऐसा लगने लगा कि मानों तीन लोकों को दग्ध करने जा रहे हों। तब वे बोले - ''हे दुर्योधन, ऐसी बातें तुम क्यों करते हो? मेरे प्रयत्न में कौन-सी त्रुटि है? मैं शत्रु का अपार नष्ट कर रहा हूँ। क्या तुम नहीं जानते कि अर्जुन महान वीर है? गंधर्व जब तुमको बंदी बनाकर ले गये, तब कर्ण ने तुम्हारी कैसी सहायता की? क्या तुम्हारे भाइयों के साथ वह भाग नहीं गया ? उत्तर गोग्रहण के समय क्या अकेले अर्जुन ने हम सबको नहीं हराया? उसने इंद्र के द्वारा भी पराजित न कर सकनेवाले निवात और कवच को नहीं हराया? तुमने यह युद्ध जान-बूझकर मोल लिया है! तुम अपने शत्रु का आप ही वध करो। हम भी देखकर प्रसन्न हो जायेंगे। मेरी बात रही, अब, मैं शिखंडी को छोड़ बाक़ी सब सोमक और पांचालों का वध कर डालूँगा, अन्यथा मैं मर जाऊँगा। इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता। कल मैं महायुद्ध करने जा रहा हूँ, तुम शिविर में जाकर सो जाओ।''

दुर्योधन यह बात सुनकर संतुष्ट हुआ। दूसरे दिन सबेरे जागते ही अपने पक्ष के राजाओं से बोला - ''आज भीष्म पितामह भयंकर युद्ध करने जा रहे हैं।'' इसके बाद दुःशासन से कहा - ''आज हमारी विजय होनेवाली है। हमें भीष्म की रक्षा करनी होगी। इसमें शकुनी, शल्य, कृपाचार्य, द्रोण और विविंशती की सहायता की आवश्यकता है।''

नौवें दिन युद्ध प्रारंभ हुआ। भीष्म ने सर्वतोभद्र नामक व्यूह में कौरव सेनाओं को खड़ा किया। पांडवों ने उसके विरुद्ध प्रतिव्यूह की रचना की। युद्ध के शुरू होते ही अभिमन्यु आवेश में आ गया। उसने द्वितीय अर्जुन की भांति कौरव सेनाओं, सैंधव, कृपाचार्य, द्रोण, अश्वत्थामा जैसे महावीरों को तितर-बितर कर दिया। तब दुर्योधन ने राक्षस वीर अलंबस को अभिमन्यु के साथ युद्ध करने के लिए प्रेरित किया।

अभिमन्यु और अलंबस के बीच घोर संग्राम हुआ। अलंबस ने भयंकर युद्ध तो किया, मगर वह अभिमन्यु के सामने ठहर नहीं पाया। उसने माया युद्ध शुरू किया, उसमें भी सफल न हो सका। आखिर पराजित हो भाग गया। इसके बाद अभिमन्यु कौरव सेनाओं का नाश करते हुए आगे

स वक़्त भीष्म ने अभिमन्यु का सामना । उसी वक़्त अर्जुन भी अभिमन्यु के पास हुँचा। भीष्म के साथ अनेक महावीर थे । कार अर्जुन के साथ कई योद्धा थे । दोनों के बीच भीषण समर हुआ ।

सरी ओर से भगदत्त तथा श्रुतायु ने गजसेना थ भीम पर हमला किया । भीम गदा लेकर र से उतरा और अपने चारों तरफ़ घेरे हुए ों तथा गज योद्धाओं पर अपने गदे का प्रहार । फिर क्या था, गजसेना भाग गयी।

स दिन भीम ने भयंकर युद्ध किया । पांडवों ना में भी कई सैनिक मारे गये, पांडव दल के सैनिक अस्त्र फेंककर भाग गये । इतने में न्त हो गया जिससे युद्ध बंद हुआ ।

गाज भीष्म का दारुण युद्ध देख पांडव घबरा युधिष्ठिर के मन में भी युद्ध के प्रति विरक्ति हो गयी । उसने कृष्ण के पास जाकर पूछा ब क्या किया जाय ! कृष्ण ने युधिष्ठिर को सांत्वना देते हुए समझाया - ''तुम चिंता न करो। अगर अर्जुन ने भीष्म का वध न किया तो मैं भीष्म का वध करूँगा । यदि भीष्म मर गये तो तुम्हारी विजय को रोकनेवाली शक्ति कोई न होगी। तुम्हारे शत्रु मेरे भी तो शत्रु हैं ! अर्जुन चाहेगा तो अवश्य भीष्म का वध कर सकता है । यह उसका कर्तव्य है ।''

यह बात सुनकर युधिष्ठिर ने कृष्ण से कहा - ''भीष्म पितामह हमारे हितैषी हैं । वे हमारी विजय की कामना करनेवाले हैं । उन्होंने बताया है कि भले ही वे हमारे पक्ष में युद्ध न करें, मगर हमारा हित चाहेंगे । हम उनके पास जाकर पूछेंगे कि उनकी मृत्यु कैसे हो सकती है? ऐसे महा पुरुष का हम वध करना चाहते हैं, हे कृष्ण! क्षत्रिय-धर्म कैसा पाप पूर्ण है!''

कृष्ण इन बातों पर प्रसन्न हुए और बोले- ''भीष्म जैसे महावीर की मृत्यु कैसे हो सकती है, यह बात वे ही जानते हैं । हम उन्हीं के पास जाकर पूछेंगें !''

चन्दामामा

'भारत की खोज' प्रश्नोत्तरी

इस अंक में दी गई प्रश्नोत्तरी के उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे । तब तक इनके उत्तर आप स्वयं खोजने की कोशिश करें और भारत की प्राचीन परम्परा के ज्ञान से अपने को समृद्ध करें ।

१४ नवम्बर को बाल दिवस है । इसलिए इस महीने की प्रश्नोत्तरी प्रसिद्ध ऐतिहासिक बाल-चरित्रों पर आधारित है ।

1

१. अ. वह कौन-सा बालक था जो कृष्ण के साथ संत संदीपानी के पास गुरुकुल में पढ़ता था और कई वर्षों बाद द्वारका में कृष्ण को मिलने आया?

आ. एक राक्षस राजा का वह कौन सा पुत्र था, जिसने अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध विष्णु की उपासना की?

इ. वह छोटा राजकुमार कौन था जिसे उसकी पिता की गोद में बैठने के लिए उसकी सौतेली माँ ने अपमानित किया और उसने जंगल में जाकर कठोर तपस्या कर ईश्वर को प्राप्त कर लिया?

ई. वह राजकुमार कौन था जो साँप के काटने से मर गया और उसकी माँ श्मशान में उसकी लाश पर रात भर रोती रही और वहीं वह अपने पति से मिली?

उ. पाण्डवों में सबसे कम आयु का कौन था, जो क्रूर कौरवों के व्यूह में मारा गया?

2

एक बालक अपनी अल्पायु में ही संत रूप में प्रसिद्ध था । वह एक बार अनेक व्यवहारिक विषयों पर चर्चा करते हुए एक जन-समूह को संबोधित कर रहा था । बालक ने अपने व्याख्यान के दौरान कहा कि कोई भी व्यक्ति तब तक सत्य को नहीं पहचान सकता जब तक उसके भीतर का "आणवम्" जो तमिल में अहंकार का अर्थ देता है, समाप्त नहीं हो जाता ।

"आणवम् को विस्तार से बताओ ।" एक बूढ़ा व्यक्ति उठा और बहुत ही रूखी आवाज में उस बालक से कहा । वह आदमी बहुत ही सज्जन और पंडित व्यक्ति के रूप में जाना जाता था । वह यह नहीं चाहता था कि उसकी उपस्थिति में लोग उस छोटे से बच्चे की बात सुनें ।

वह बालक प्रश्न को सुनकर भी बिल्कुल मौन रहा । परन्तु उस आदमी ने अपने प्रश्न को और रूखे स्वर में कई बार दुहराया । बाल संत ने अपनी आँखें उस पर टिका दीं और बिना कुछ उत्तर दिए उसकी ओर ऊँगली दिखाई ।

उस आदमी का चेहरा धूमिल हो गया। लोग उसे काँपते हुए देखने लगे । दूसरे ही क्षण वह जाकर नन्हें संत के समक्ष झुक गया और उसे अपना गुरू मान लिया । उस आदमी ने जान लिया कि वह स्वयं में ही आणवम् पाले बैठा था।

वह बालक कौन था? और वह पंडित व्यक्ति कौन था?

गोविंद का बोरा

विशालपुर में गोविंद नामक एक धनाढ्य व्यक्ति था । उसकी विशाल संपत्ति थी । इसलिए उसके सम्बन्धी, मित्र, अन्य जन सदा उसकी तारीफ़ के पुल बाँधते रहते थे ।

गोविंद स्वयं कवि नहीं है, परंतु उसने कितने ही काव्यों व शास्त्रों का पठन किया । साधारण विषय को भी अद्‌भुत कहानी की तरह बताने में वह सिद्धहस्त था ।

एक तरफ अपार संपत्ति और दूसरी तरफ़ प्रभावशाली कथन शक्ति, दोनों के मिश्रण से वह आकर्षण-केंद्र बन चुका था । उस गाँव में लोग कहा करते थे ''कुछ सुनें तो गोविद की बातें ही सुनें।'' यह कहावत भी वहीं पैदा हुई ।

कुछ समय बाद केशव नामक एक अनाथ व्यक्ति विशालपुर आया । उसे काम की बहुत आवश्यकता थी ।

केशव किसी भी तरह का काम करने के लिए तैयार था । आख़िर उसे पद्मनाभ के यहाँ काम मिला । इसका भी एक कारण है ।

पद्मनाभ साठ साल का होगा । उसका स्वास्थ्य भी कुछ ठीक नहीं था । अपने बेटे और बहु से भी वह बात-बात पर झगड़ता रहता था। आख़िर एक दिन उसने उन सबको घर से भगा दिया । कोई और चारा नहीं था, इसलिए उसकी पत्नी सीता मात्र उसके साथ रहती थी । दोनों की तबीयत लगभग एक जैसी थी, इसलिए दोनों आपस में लड़ते-झगड़ते भी थे । जो कोई भी वहाँ काम करने आता, भाग जाता था। उन्हें एक नौकर की बड़ी आवश्यकता थी, पर उनके यहाँ काम करने कोई भी आने के लिए तैयार नहीं था। इसी कारण केशव को वहाँ नौकरी मिली ।

केशव बड़ा ही व्यवहार कुशल था। चमत्कारपूर्ण बातें करने में पटु है । इस-विषय में उसकी बराबरी के आदमी बिरले ही मिलते हैं । लोग उससे और सुनने के लिए लालायित रहते थे। उसकी बातों ने पद्मनाथ और उसकी पत्नी पर जादू कर दिया । अब दोनों में घनिष्ठता बढ़ने लगी । उनके बेटे-बहू घर वापस आ गये और

माता-पिता के साथ-साथ रहने लगे ।

यों एक ही साल के अंदर लोग कहने लगे "केशव की बातें सुनोगे तो किसी के भी घर में पारस्परिक झगड़े होंगे ही नहीं ।"

संपत्तिहीन केशव की यह बाहवाही गोविंद को अच्छी नहीं लगी । उसकी ख्याति सुन-सुनकर वह उससे चिढ़ने लगा । उसे अपमानित करने के मौके की ताक में था । ऐसी स्थिति में शिव नामक एक व्यक्ति उसके यहाँ कर्ज़ माँगने आया । वह एक ग़रीब किसान था । पद्मा उसकी सयानी बेटी थी । रत्नों के व्यापारी के पुत्र भद्र ने उससे प्रेम किया और उससे शादी करने के लिए तैयार बैठा था । शिव को यह शादी मंजूर थी पर भद्र के पिता ने ५,००० अशर्फ़ियों की मांग की। भद्र ने भी कह दिया कि पिता की स्वीकृति प्राप्त होने के बाद ही यह विवाह करेगा ।

विवशतावश शिव, गोविंद के पास कर्ज़ माँगने आया । इस अवसर का फ़ायदा उठाते हुए गोविंद ने उससे कहा "इतना कर्ज़ लोगे तो बरबाद हो जाओगे । कर्ज की इस समस्या का कोई परिष्कार शायद केशव ढूँढ पाये । उसी के पास जाकर सलाह माँगना ।"

शिव ने अपने आपको इस बात पर कोसा कि यह उपाय उसे क्यों नहीं सूझा । वह सीधे केशव के पास गया । पूरा विवरण जानने के बाद केशव ने कहा "भद्र अगर सचमुच पद्मा से प्रेम करता रहा है तो भला दहेज का सवाल कहाँ से और कैसे उठने की गुँजाइश है? उसे तो बिना दहेज लिये शादी करनी चाहिये । पद्मा जैसी सुन्दरी के लिए एक पैसा भी दहेज में देना नहीं चाहिये । अगर वह माने तो उससे मैं शादी करूँगा ।"

यह बात भद्र के कानों में पड़ी । तुरंत शिव से मिलकर उसने कहा "दहेज के बारे में किसी भी तरह से अपने पिता को मना लूँगा । दहेज में कुछ भी देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । बस, पद्मा से मेरी शादी करा दीजिए ।"

बग़ल में ही खड़ी पद्मा ने ये बातें सुनीं और आगे आकर कहा "जब तक केशव ने शादी का प्रस्ताव पेश नहीं किया तब तक तुम चुप रहे । तुमने यह नहीं कहा कि मुझे दहेज नहीं चाहिये । केशव मुझसे शादी का प्रस्ताव न रखता तो तुम अवश्य ही मेरे पिता से दहेज माँगते और लेते । मैं केशव से ही शादी करूँगी ।"

यह जानकर केशव घबरा गया । उसने पद्मा को बहुत समझाया ।

भद्र ने भी घबराते हुए कहा "ग़लती किसी से भी होती है । यह सहज है । मुझे माफ़ करना । शादी होने के बाद तुम्हें चंदनपुर ले जाना चाहता था और वहाँ की विचित्रताएँ दिखाना चाहता था । मुझे निराश न करो ।" भद्र ने कहा ।

केशव ने भी कहा "हाँ पद्मा कारण को साबित

करने पर ही किसी को भी वहाँ जाने की अनुमति मिलती है। चूँकि भद्र व्यापारी है, इसलिए उसे वहाँ जाने की अनुमति आसानी से मिल सकेगी।'' फिर भी पद्मा केशव से ही शादी करने का हठ कर रही थी । उनकी शादी भी हो गयी । गाँव भर में केशव की प्रशंसा हुई ।

केशव की अक़्लमंदी पर गोविंद भौंचक्का रह गया । पर अब उसमें यह हठ जोर पकड़ता गया कि सबकी समस्याओं को सुलझानेवाले केशव के घर में समस्याओं की सृष्टि करनी होगी । इसके लिए बहुत तक़लीफ उठाकर उसने चंदनपुर जाने की अनुमति प्राप्त कर ली ।

उसके बाद केशव के घर जाकर उसने कहा ''मैं चंदनपुर जा रहा हूँ । तुम्हारी पत्नी मेरे लिए पुत्री के समान है । तुमसे विवाह न रचाती तो भद्र के साथ चंदनपुर जा पाती । उसे अपने साथ ले जाकर चंदनपुर दिखाने की मेरी प्रबल इच्छा है। क्या तुम्हें यह स्वीकार है?''

केशव ने इसका निर्णय पद्मा पर छोड दिया। पद्मा ने स्पष्ट कह दिया कि ''मेरा पति ही मेरे लिए सर्वस्व है । चंदनपुर देखूँगी तो अपने पति के साथ ही जाकर देखूँगी ।''

अपनी योजना में असफल गोविंद निराश हो अकेले ही चंदनपुर गया । इस घटना के बाद केशव में अपनी पत्नी को चंदनपुर ले जाने की तीव्र इच्छा जगी । ''राजधानी में राघव नामक एक राजकर्मचारी है । उसे हज़ार अशर्फ़ियों की घूस दी जाए तो वह इसके लिए आवश्यक प्रबंध करने की क्षमता रखता है । एक बार चंदनपुर में प्रवेश हो जाए तो वहाँ धन कमाने के कितने ही मार्ग खुले हैं । कुछ दिन पत्नी के साथ आराम भी करेंगे ।'' केशव ने सोचा ।

केशव ने हज़ार अशर्फ़ियाँ पाने के लिए प्रयत्न किये । वह सीधे एक साहुकार के पास गया और

हज़ार अशर्फ़ियाँ कर्ज़ पर ली । उसी दिन वह पत्नी सहित चंदनपुर निकला ।

चार हफ़्तों के बाद गोविंद चंदनपुर से लौटा। वहाँ की ख़ासियतें जानने के लिए उसके रिश्तेदार व दोस्त उसके यहाँ आये । गोविंद ने वहाँ की ख़ासियतों का वर्णन करके सविस्तार उन्हें बताया और अंत में कहा ''हमें विश्वास नहीं होगा कि भूमि पर ऐसा भी एक नगर है । उदाहरण के लिए अपने साथ लायी इन वस्तुओं को खुद देखिये।''

उन वस्तुओं में से रेशमी साडियाँ थी, झब्बेवाली टोपियाँ हैं, चमकते चप्पल थीं, गानेवाली गुडियाँ थी। इनके अलावा विचित्रताओं से भरी विविध प्रकार की वस्तुएँ थीं।

''आपसे और बहुत कुछ कहना है । रोज़ आया करो'' उसने कहा । पर दूसरे दिन गोविंद के घर कोई नहीं आया । कारण, उसी दिन केशव पत्नी समेत चंदनपुर से लौट आया । जितने भी

जाने-पहचाने लोग थे, उन सबके लिए वह भेंटें ले आया। भद्र को चमकते-दमकते पथ्थरों वाली एक अंगूठी दी । उसने साहुकार को ब्याज सहित रक़म चुका दी और उसे पंखवाली एक क़लम भेंट में दी ।

दूसरे दिन गोविंद ने उन सबको अपने घर बुलाया, जिन्हें केशव से भेंटें मिली थीं । उसने उन सबसे पूछकर जाना कि उसने क्या-क्या भेंटें किस-किसको दी । टोपी पानेवाले चलपति से उसने कहा, ''हाय, यह भी कोई भेंट हुई । तुम्हारे नसीब में शायद यही लिखा था । मैं तेरे लिए सोने की अंगूठी ले आया । पर क्या फ़ायदा? आप सब लोगों को भेंटें देने के लिए मैंने बहुत चीज़ें खरीदीं । उन्हें एक बोरे में डाल दीं । जहाज़ से उतरते-उतरते, पता नहीं वह कहाँ और कैसे ग़ायब हो गया । बहुत ढूँढ़ा, कहीं नहीं मिला ।'' तभी वहाँ केशव भी आया, उसने बोरे की पूरी पूरी कहानी सुनी।

गोविंद ने केशव को देखकर कहा ''क्यों केशव, लगता है, तुम मेरे लिए कुछ भी नहीं ले आये !''

केशव ने अपनी असहायता का नाटक करते हुए कहा ''मेरे पास चीज़ों की भरमार थी, इसलिए आप ही के बोरे में डाली थी न? उन्हीं में आपके लिए लाया मोतियो का एक हार भी था । बाप रे, वह बोरा खो गया?''

केशव की चमत्कार-भरी बातों पर सभी ठठाकर हँस पड़े । सबके चले जाने के बाद गोविंद ने केशव से कहा ''तुमने उन सबके सामने मुझे नीचा दिखाया। आख़िर तुम चाहते क्या हो?

केशव ने हँसते हुए कहा ''जिस दिन आप आये, उसी दिन बोरे की बात बता देते तो किसी को सन्देह न होता । इसीलिए आपके बोरे की कहानी पर किसी को भी विश्वास नहीं है ।'' कहकर वह चला गया ।

तब से चंदनपुर से लौटे किसी भी व्यक्ति से केशव पूछता कि क्या मेरे लिए कोई भेंट नहीं ले आये तो वह कहता ''मैं करूँ क्या? गोविंद के बोरे में रखा और वह कहीं गुम हो गया ।''

कोई बच्चा अगर किसी चीज़ के लिए हठ करता तो उसे यह कहकर चुप करा देते थे कि गोविंद के बोरे में डाल दिया । उसके मिल जाने पर दे दूँगा।

अब गोविंद की समझ में आ गया कि वह कितना स्वार्थी व अभिमानी है । क्रमशः वह अपने स्वभाव को बदलता गया और अच्छा नाम कमाया। पर 'गोविंद का बोरा' उसी गाँव में ही नहीं बल्कि अन्य गाँवों में भी कहावत बन गया ।

THE AMUL
CHEESE BOY
IN PICNIC PANIC

One bright sunny day...

...a picnic is in progress.

Little Munnu Verma crawls away.
GURGLE

Suddenly, huge rocks come tumbling down the mountain.
RUMBLE

Amul cheese boy eats an Amul cheese slice...

...and becomes strong and powerful.

He smashes the falling rocks...
BANG

...reducing them to small pieces.
CRACK

Munnu is rescued and back with his family.

All thanks to the cheese that has more milk in it.

Amul cheese slices.
Amul cheese. Yes please!
Amul
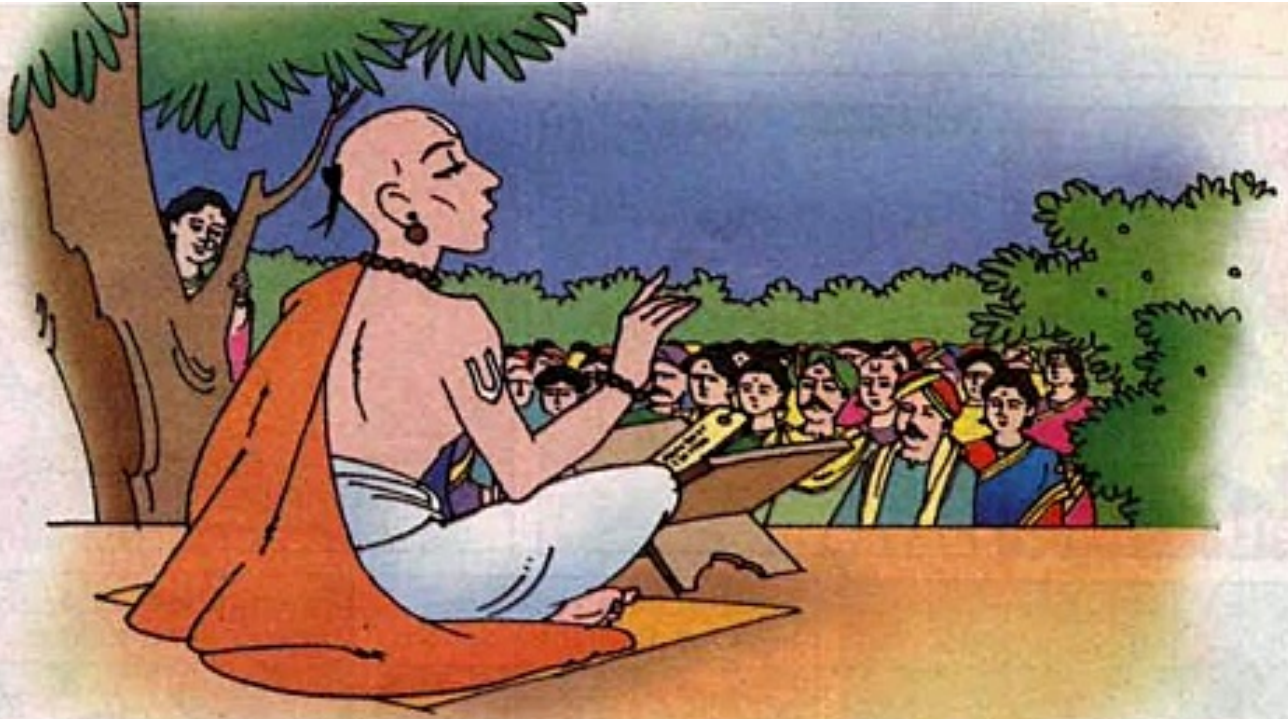
नाक और नथ

. संध्या का समय था। ग्रामीणों ने गाँव के बीचों-बीच एक ऊँचा मंच तैयार किया । उस मंच पर आसीन होकर सुप्रसिद्ध कवि और भक्त तुलसीदास स्वरचित रामचरित मानस में से कुछ पंक्तियाँ बड़े ही सुरीले स्वर में गाकर सुना रहे थे । मंच के सामने ही बैठी जनता मंत्रमुग्ध होकर बड़ी ही तन्मयता से सुन रही थी । तुलसीदास श्रीराम व सीता के विवाह का वर्णन बड़ी मनमोहक शैली में कर रहे थे ।

दो-तीन घंटों के बाद काव्य-पठन कार्यक्रम समाप्त हो गया । कुछ लोग उठकर जाने लगे तो कुछ लोग तुलसीदास के पास आकर उनके पैर छूने लगे । तुलसीदास राम नाम का स्मरण करते हुए उन्हें आशीर्वाद दे रहे थे ।

तुलसीदास ने उस गाँव के एक जमीनदार के यहाँ उस दिन आतिथ्य स्वीकार किया था । वह वहाँ आया और तुलसीदास से कहने लगा "स्वामी, आपको अभी नहाना है, पूजा भी करनी है । इन कार्यक्रमों की पूर्ति के बाद ही आप भोजन करेंगे । इसलिए अब आप चलें तो अच्छा होगा ।"

तुलसीदास सिर हिलाते हुए खड़े हो गये । तब उनकी दृष्टि मंच के किनारे खड़ी एक गृहिणी पर पड़ी । उन्होंने भांप लिया कि वह स्त्री उनसे मिलना चाहती है, पर आगे आने में संकोच कर रही है । तुलसीदास ने बड़े ही स्नेह-भरे स्वर में उस गृहिणी से पूछा "क्या आप मुझसे मिलना चाहती हैं?"

. वह बेहद खुश होती हुई आगे आयी और घुटने टेककर तुलसीदास को प्रणाम किया। तुलसीदास ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए उसे आशीर्वाद दिया । वह उठकर खड़ी हो गयी । उसके होठों पर मुस्कान जैसी की तैसी भरी हुई थी।

"पुत्री, क्या तुम्हें कुछ कहना है?" तुलसीदास ने मृदु स्वर में पूछा? गृहिणी ने इर्द-गिर्द देखा और जब निश्चय कर लिया कि वहाँ कोई नहीं है तो वह पूछ बैठी "महात्मा, क्या मेरे मुखमंडल पर कोई

पुरंधर

अद्‌भुत भरी बात दीख रही है?''

''नन्हें शिशु के मुख की तरह तुम्हारा मुख भी निर्मल अद्‌भुत लग रहा है ।'' तुलसीदास ने कहा ।

''मेरे मुख पर शोभायमान नथ क्या आपको दिखायी दे रही है ?'' उस युवती ने पूछा ।

''हाँ, दिखायी दे रही है । वह बहुत ही सुंदर लग रही है ।'' तुलसीदास ने कहा ।

साधारण मनुष्यों के मन को समझने की अद्‌भुत शक्ति तुलसीदास में थी, अतः उन्होंने बड़ी ही आसानी से जान लिया कि वह गृहिणी चाहती क्या है? उन्होंने जान लिया कि वह स्त्री चाहती है कि सभी उसके नथ की भरपूर प्रशंसा करें । वह चाहती है कि वे भी उसके नथ की प्रशंसा करें, जैसे अन्य लोग करते हैं ।

वह कहने लगी ''सब इस नथ की तारीफ़ करते रहते हैं । बहुत दाम देकर इसे मेरे पति ने मेरे लिए खरीदा था । मैंने मना किया, फिर भी वे मेरे लिए ही यह क़ीमती नथ खरीदकर ले आये । इससे आप जान ही गये होंगे कि वे मुझे कितना चाहते हैं, मुझसे कितना प्रेम करते हैं । यह गहना आपको भी पसंद आया । है न? यह आपको अद्‌भुत लग रहा है न?''

'हाँ पुत्री, नथ बहुत ही सुंदर है । तुम्हारे सुंदर चेहरे पर यह और सुंदर लग रही है । इसकी सुंदरता की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है । इससे यह भी मालूम होता है कि तुम अपने पति को कितना चाहती हो । तुम्हारे पति प्रेम को देखकर मुझे अपार हर्ष हो रहा है । जिस पति ने आपको यह क़ीमती गहना खरीदकर दिया, तुमने उस पति को अपनी कृतज्ञता जतायी । पर क्या तुमने उस भगवान को धन्यवाद दिया, जिसने तुम्हें ऐसी सुंदर नाक प्रदान की? यह मत भूलो कि इसका सारा श्रेय उस भगवान को ही जाता है न कि आपके पति को । पुत्री तुम उस भगवान का सदा स्मरण करती रहो । इससे तुम्हारा कल्याण होगा ।'' तुलसीदास ने उसे हितबोध किया ।

''ऐसा ही करूँगी महात्मा'' कहती हुई वह वहाँ से चली गयी ।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?
तुम एक सामान्य पोस्टकार्ड पर इसे लिख कर इस पते पर भेज सकते हो :

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. 82 (पु.न. 92), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -97.

जो हमारे पास इस माह की 25 तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर 100/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

ब धा इ यां

सितम्बर अंक की पुरस्कार विजेता हैं :
अनुराधा कुमारी
डॉ. राम चन्द्र प्रसाद
ग्राम - दोनमा रोड, पोस्ट - ढोली (सकरा)
जिला - मुजफ्फरपुर (बिहार)

विजयी प्रविष्टि :

पहला चित्र : "जंगल के राजा की है, संख्या घटती जाती
दूसरा चित्र : इसीलिए हम बच्चे, कृत्रिम शेरू से मन बहलाती"

CHANDAMAMA (Hindi) NOVEMBER 2000 Registrar of Newspapers, India RN1087/57